सर्वहारा दृष्टिकोण

सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर ऑफ इण्डिया (कम्युनिस्ट) का मुखपत्र (पाक्षिक)

वर्ष-31 अंक-17 7 सितम्बर, 2016 मुख्य संपादक कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती कुल पृष्ठ 8 मूल्य : 2 रुपये

कॉमरेड माओ त्से-तुंग लाल सलाम

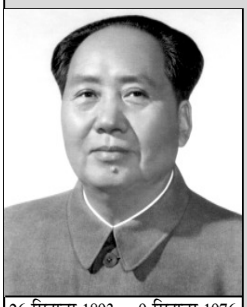

26 सितम्बर 1893 – 9 सितम्बर 1976

''हमने एक बहुत बड़ी जीत हासिल की है। लेकिन पराजित वर्ग संघर्ष जारी रखेगा। इसके सदस्य अभी भी चारो तरफ हैं और अपना अस्तित्व रखते हैं। इसलिए हम इसे अन्तिम जीत, दशकों तक नहीं कह सकते। हमें अपनी सतर्कता नहीं खोनी चाहिए। लेनिनीय नजरिये से एक समाजवादी देश में अन्तिम जीत के लिए न केवल देश के सर्वहारा और व्यापक आम जनता के प्रयासों की जरूरत होती है, बल्कि विश्व क्रान्ति की जीत और इस धरती पर से मानव द्वारा मानव के शोषण के खात्मे पर भी निर्भर होती है ताकि समस्त मानवजाति को मुक्ति मिल सके। फलस्वरूप, हल्के-फुल्के दिल से हमारे देश में क्रान्ति की अन्तिम जीत की बात करना गलत है; यह लेनिनवाद के खिलाफ बात है और तथ्यों की पुष्टि नहीं करती है। ''

– माओ त्से-तुंग

(15-04-1969; सांस्कृतिक क्रान्ति के बारे में दिशा-निर्देशों में उद्धृत)

देशव्यापी आम हड़ताल सफल करने के लिए श्रमिकों को दी बधाई

देशव्यापी आम हड़ताल के अवसर पर एआईयूटीयूसी के महासचिव कॉमरेड शंकर साहा ने 2 सितम्बर को निम्नलिखित बयान प्रेस को जारी किया :

हम देश के मेहनतकश लोगों को बधाई देते हैं जिनके सम्पूर्ण बहुमत ने अपनी 12 सूत्री मांगों के समर्थन में 2 सितम्बर की देशव्यापी हड़ताल को सफल बनाने के लिए लगभग सभी राज्यों में अपनी भागीदारी निभाई। इस हड़ताल को ऐतिहासिक बनाने के लिए भी हम उनको बधाई देते हैं। इस हड़ताल ने संयुक्त संघर्ष के बारे में अंतर्राष्ट्रीय बिरादरी को एक संदेश दिया है जिसमें 20 करोड़ से ज्यादा भारतीय मजदूर-कर्मचारियों ने भाग लिया।

रणनीतिक महत्व की बड़ी पब्लिक सेक्टर इकाइयों में जहां उत्पादन मुख्यत: ठेका मजदूरों द्वारा किया जाता है उन सभी ने और स्थाई कामगारों ने भी बड़ी संख्या में 2 सितम्बर की हड़ताल में हिस्सा लिया जिससे पब्लिक सेक्टर की इकाइयों में उत्पादन जबरदस्त रूप से बाधित हुआ।

हम मांग करते हैं कि हड़ताल में जनता की अगुआई करने की वजह से जेल में बंद किये गये हमारी तमिलनाडू राज्य कमेटी के अध्यक्ष कॉमरेड अनवरतन और हमारी आसाम राज्य कमेटी के सचिव कॉमरेड अजहर हुसैन व अन्यों को राज्य सरकारों द्वारा तुरंत रिहा किया जाये। हम करोड़ों मजदूरों से आग्रह करते हैं कि वे एकता बनाये रखें, इसे और भी मजबूत बनायें और बीजेपी सरकार की अगुआई में शासक वर्ग द्वारा किये जा रहे चौतरफा हमलों के खिलाफ संघर्ष की दिशा में आगे बढ़ते जायें।

भुवनेश्वर रेलवे स्टेशन पर 2 सितम्बर की हड़ताल

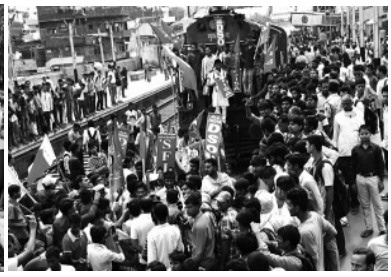

पटना जंक्शन पर रेल रोकते हुए श्रमिक एवं छात्र

पेट्रोल व डीजल मूल्य वृद्धि की एसयूसीआई(सी) ने की निंदा

पेट्रोल व डीजल के दामों में बढ़ोतरी की कड़ी निंदा करते हुए एसयूसीआई(सी) के महासचिव कॉमरेड प्रभास घोष ने 1 सितम्बर को जारी एक बयान में कहा कि दामों में की गई यह भारी बढ़ोतरी सभी आवश्यक वस्तुओं के रोजाना बेतहाशा महंगे होने की स्थिति में हांफ रहे लोगों पर एक घातक हमला है। उन्होंने तमाम आवश्यक चीजों की कीमतें बढ़ाने में बीजेपी-नीत केन्द्र सरकार तथा बीजेपी व अन्य राजनैतिक पार्टियों की राज्य सरकारों की सांठगांठ की भी कड़ी आलोचना की। उन्होंने पेट्रोल व डीजल मूल्यवृद्धि के आदेश को तुरंत वापस लेने की मांग की।

इन्सानियत और मूल्यबोधों का विकास ही है देश का असल विकास

5 अगस्त, महान नेता कॉमरेड शिवदास घोष स्मृति सभा में कॉमरेड प्रभाष घोष

(गत 5 अगस्त महान नेता कॉमरेड शिवदास घोष स्मृति दिवस पर पार्टी की पश्चिम बंगाल राज्य कमेटी के आह्वान पर कोलकाता के रानी रासमणि एवेन्यू की सभा में पार्टी के महासचिव कॉमरेड प्रभाष घोष ने भाषण दिया था। लगातार वर्षा के बीच हजारों-हजार लोगों ने धैर्य के साथ पूरा भाषण सुना।)

कॉमरेड सभापति, कॉमरेड्स और साथियो,

हम जिनका लालन-पालन कॉमरेड शिवदास घोष की स्नेहछाया में हुआ है, आज के दिन यह प्रश्न उनके विवेक को बार-बार धक्का देता है–हमने जितनी दूर तक उनसे सीखा उसको कितनी दूर तक लागू कर पाए हैं। हमें क्रांतिकारी के रूप में ढालने के लिए खुद को तिल-तिल खपाते हुए मात्र 53 वर्ष की उम्र में इस महान नेता ने अंतिम सांस ली थी। हमने कहां तक अपने जीवन-संघर्ष में और देश की जनता के मुक्ति आंदोलन में उस शिक्षा को क्रियान्वित करने की भूमिका निभाई है? जिनके नाम और शिक्षा का कभी भी मीडिया ने प्रचार नहीं किया, प्रचालित अर्थों में

(शेष पृष्ठ 2 पर)

कोलकाता : सर्वहारा के महान नेता कॉमरेड शिवदास घोष की स्मृति सभा को सम्बोधित करते हुए कॉमरेड प्रभास घोष

कॉमरेड प्रभास घोष का भाषण

(पृष्ठ 1 का शेष)

ताकत कहने से जो समझा जाता है जिस पार्टी की सरकार-एमपी-एमएलऐ नहीं हैं, उसी पार्टी के संस्थापक यह महान नेता ऐसी क्या शक्ति देकर गए हैं जिससे बलबूते पर हमारी पार्टी निरंतर शक्ति अर्जित करती जा रही है। देश के 22 राज्यों में पार्टी का संगठन निर्मित हो चुका है। देश के बाहर भी इस महान नेता की शिक्षा, इस युग के श्रेष्ठ मतवाद मार्क्सवाद-लेनिनवाद-शिवदास घोष की चिंतनधारा वहां के क्रांतिकारियों को प्रेरित और अनुप्राणित कर रही है। इसी शिक्षा के आकर्षण से ही इस सभा में भयंकर बाधा पैदा कर रही मूसलाधार बारिश की परवाह न करते हुए इस विशाल जनसभा में आप गहरे आवेश और श्रद्धा के साथ नेताओं को सुन रहे हैं। उसी अमूल्य शिक्षा के आधार पर ही मैं कुछ बातें आपके सामने रखूंगा।

पहले ही याद आ रहा है, 1967 में एक भाषण के दौरान बहुत दुख के साथ इस महान नेता ने जो कहा था आज वह कितना मर्मांतिक सत्य होकर दिखाई दे रहा है। उन्होंने कहा था हम अपनी जड़ों से कट गए हैं। संस्कृति का जो उच्च स्वर आजादी आंदोलन के दौरान तैयार हुआ था हम उसकी धारावाहिता की रक्षा नहीं कर पा रहे हैं। बड़ी-बड़ी बातें हमने दुनिया से ले ली हैं लेकिन देश की मिट्टी में पैदा हुई उच्च संस्कृति के साथ मानो हमने अपना सम्पर्क सूत्र खो दिया है। आज के दौर मे राजनैतिक आंदोलन, जन आंदोलन, साहित्यिक आंदोलन के क्षेत्र में नीति-नैतिकता का, रुचि-संस्कृति का उच्च मान गिर गया है। जो उच्च मान एक समय में इस देश में पैदा हुआ था वह धूल में मिल गया है। परिणामत: हम अपनी जड़ों से कट गए हैं। हम बड़ी-बड़ी बातें करते हैं, लेकिन बड़ी हृदयवृति का कारोबार नहीं करते हैं।

विद्यासागर जैसे अतीत के महापुरुषों के जीवन से सीख लेकर ही बढ़ना होगा आगे

इस प्रसंग में आप लोगों को याद दिलाना चाहता हूँ कि सिर्फ कुछ दिन पहले 29 जुलाई एक ऐतिहासिक स्मरणीय दिन चला गया। उस दिन को इस देश के कितने लोगों ने याद किया है? इसी बंगाल के स्कूल-कॉलेजों, घर-घर में, गांवों में, शहरों के मोहल्लों-मोहल्लों में, भारत के प्रांतों प्रांतों में आज कितने लोग उनका नाम जानते हैं? इसी दिन 125 वर्ष पहले महान मानवतावादी ईश्वरचंद विद्यासागर ने अंतिम सांस ली थी। फिर भी कितने लोग आज उनको जानते हैं, कितने लोग आज उनको याद करते हैं? आज हम जो जड़ों से कट गए हैं, हम जो अतीत के साथ सम्पर्क सूत्र खो बैठे हैं, यही है आज का बहुत बड़ा हृदयविदारक सत्य! और महान चिंतनकार विद्यासागर न होते तो भारत में नवजागरण नहीं होता, आजादी आंदोलन नहीं होता, शिक्षा की अग्रगति कहने से जो समझा जाता है वह कुछ नहीं होता। विद्यासागर न रहने से हम कॉमरेड शिवदास घोष को भी नहीं पा सकते थे। कॉमरेड शिवदास घोष कहते थे, विद्यासागर भारत के नवजागरणकाल के श्रेष्ठ मनुष्य, एकदम विशुद्ध चरित्र के धनी महान व्यक्ति, इस देश में धर्मनिरपेक्ष मानवतावादी चिंतन के प्रवर्तक थे। इस देश में राममोहन, विद्यासागर, विवेकानंद, रवीन्द्रनाथ, शरत्चंद्र, नजरूल, देशबंधु, खुदीराम, सुभाषचंद्र, भगतसिंह, सूर्यसेन, प्रीतिलता से लेकर जितने भी चिंतनकार, महान क्रांतिकारी योद्धा, शहीद हुए हैं, उन सभी के ही शिष्य के रूप में किशोर अवस्था से कॉमरेड शिवदास घोष ने अपना सफर शुरू किया था। उन्होंने सभी युगों के महापुरुषों से, यहां तक कि धर्म प्रचारकों के जीवन-संघर्ष से भी शिक्षा ली थी। हमें भी शिक्षा लेने के लिए कहा था। फिर वे इस युग के श्रेष्ठ आदर्श मार्क्सवाद के सम्पर्क में आए थे और मार्क्सवाद को ग्रहण करके महान मार्क्स-एंगेल्स-लेनिन- स्तालिन-माओ त्से तुंग के सुयोग्य छात्र के रूप में सफर शुरू करके उन्होंने खुद मार्क्सवाद को और भी विकसित किया था, उन्नत किया था, जिसे हम 'शिवदास घोष चिंतनधारा' कहते हैं। कॉमरेड शिवदास घोष ने हमें अतीत के महापुरुषों के जीवन-संघर्ष से शिक्षा ग्रहण करके और भी आगे बढ़ते जाने की सीख दी थी। इसीलिए आज विद्यासागर के संबंध में अपने खुद के लिए और आप लोगों के लिए कुछ बातें रखूंगा क्योंकि उनकी याद को लगभग भुला दिया गया है।

कॉमरेड शिवदास घोष ने ही विद्यासागर से हमारा परिचय कराया था। आप जानते हैं, रवीन्द्रनाथ, विवेकानंद, देशबंधु, शरत्चंद्र से लेकर सुभाषचंद्र, तिलक, लाला लाजपत राय, वैज्ञानिक जगदीश चन्द्र, प्रफुल्लचन्द्र, कवि नजरूल और उस युग के सभी स्वतंत्रता सेनानी और शहीद, सभी उनके सामने श्रद्धा से नतमस्तक हुए थे। रामकृष्ण जानते थे कि विद्यासागर भगवान को नहीं मानते हैं, पूजा-पाठ में यकीन नहीं रखते हैं, फिर भी रामकृष्ण सरीखे भी विद्यासागर के प्रति श्रद्धा प्रकट करने के लिए उनके घर दौड़ कर गए थे, दक्षिणेश्वर काली मंदिर में एकबार पधारने के लिए निमंत्रण दिया था। विद्यासागर ने प्रत्युत्तर नहीं दिया, गये भी नहीं, क्योंकि इन सब में वे विश्वास नहीं करते थे। इन्हीं विद्यासागर के बारे में ही रवीन्द्रनाथ ने कहा था, मैं यदि साहित्य की थोड़ी-बहुत कुछ चर्चा कर पा रहा हूँ, उसके द्वार ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने खोले थे। वे बंगाली भाषा के प्रथम सार्थक शिल्पी थे। ईश्वरचंद्र विद्यासागर ने बंगाली साहित्य के द्वार खोले थे। 'पानी गिरे, पत्ता हिले' आदि महाकवि की इस रचना से मैंने सीखा है छन्द, सुर, झंकार। बहुत से हैं जो विद्यासागर को श्रद्धा देने से बच नहीं सकते हैं, लेकिन उनके असल पहलू को छिपा कर रखने के लिए उनकी दया भावना का ही उन्होंने प्रचार किया है। रवीन्द्रनाथ ने कहा था, 'विद्यासागर का असल पहलू विद्या नहीं, दया नहीं, अजेय पौरुष और अक्षय मनुष्यत्व है'। यही है रवीन्द्रनाथ की असाधारण श्रद्धांजलि। इस विद्यासागर को आप में से आज कितने लोग जानते हैं? इसी तरह हो रहा है देश का विकास। उस युग में वे पैदल चलकर कलकत्ता आए थे। उस समय आज की तरह यातायात के साधन नहीं थे। इसी कलकत्ता की सरजमीं पर राममोहन के पदचिन्हों का अनुसरण करते हुए उन्होंने ज्ञान की मशाल जलाई थी। शुरूआती जीवन में संस्कृत पढ़ कर शास्त्रों के पंडित हुए थे। 22 वर्ष की उम्र में वे पहली बार अंग्रेजी पढ़कर पश्चिमी सभ्यता और नवजागरण के सम्पर्क में आये थे। यूरोप में उस समय धार्मिक चिंतन के खिलाफ संघर्ष हो रहा था। धार्मिक प्रभाव से मुक्त मानवतावाद या जिसे हम सैक्युलर ह्युमनिज्म कहते हैं, उसका आंदोलन उफान पर था, जनतंत्र, जनतांत्रिक अधिकार, व्यक्ति स्वतंत्रता हासिल करने का आंदोलन उफान पर था–विद्यासागर उसी नवजागरण, धार्मिक प्रभाव से मुक्त मानवतावाद के प्रति आकर्षित हुए थे। संस्कृत में शास्त्रज्ञ होकर जो विद्यासागर और पंडित की उपाधि से नवाजे गए थे, उन ईश्वरचंद्र ने अंग्रेज सरकार से कहा था, 'वेद-वेदांत, सांख्य दर्शन के अंदर सत्य नहीं है। लेकिन मजबूरीवश ये सब हमें पढ़ाने पड़ते हैं। अत: हमें यूरोप से ऐसे दर्शन पढ़ने की जरूरत है जिनको पढ़ने से इस देश के छात्र समझ सकें कि वेद-सांख्य मिथ्या हैं। जहां-जहां अंग्रेजी ज्ञान का प्रकाश पहुंच रहा है वहां शास्त्रीय विद्या का प्रभाव घट रहा है।' इसीलिए विद्यासागर ने कहा था, पश्चिमी शिक्षा को पहुंचा दो। कहा था स्कूल-कॉलेजों में ऐसे शिक्षकों की जरूरत है जो बंगाली भाषा जानते हो, अंग्रेजी जानते हों और धार्मिक संस्कारों से मुक्त हों। लेकिन यह बात जानते हुए भी रामकृष्ण उनका आदर करते थे। विवेकानंद ने कहा था हमारे सामने आदर्श के रूप में दो व्यक्ति हैं एक रामकृष्ण और एक विद्यासागर। कारण क्या है? कारण विद्यासागर के जीवन का जबरदस्त संघर्ष। विद्यासागर ने पैदल घूम-घूम कर चंदा इकटठा करके असंख्य स्कूलों की स्थापना की थी ज्ञान का प्रकाश पहुंचा देने के लिए। कर्जवान होकर भी स्कूल स्थापित किए थे। छात्र बीए, एमए पास करके डॉक्टर, इंजीनियर बनकर बड़ी-बड़ी नौकरी करके वेतन पाएंगे, गाड़ी-मकान बनाएंगे–इस उद्देश्य से उन्होंने ऐसा नहीं किया था। इस देश के लड़के-लड़की इंसान बने, इंसानियत लेकर खड़े हो यही विद्यासागर ने चाहा था। इन्हीं विद्यासागर ने आत्मसम्मानबोध किसे कहते हैं इसकी बेमिसाल नजीर पेश की थी। आप में से कोई-कोई जानते हैं, बहुत से नहीं जानते हैं वे उस समय संस्कृत कॉलेज में अध्यापक थे। हिन्दू कॉलेज के एक अंग्रेज साहब अध्यापक थे उनका नाम 'कार' था। उनसे मिलने के लिए विद्यासागर गए थे। उन साहब ने जूतों सहित मेज पर पांव रखकर विद्यासागर का स्वागत किया। बाद में यही साहब संस्कृत कॉलेज आए। विद्यासागर ने मेज पर चप्पलों सहित पैर रखकर उनका स्वागत किया। कार साहब ने वायसराय के पास शिकायत की। विद्यासागर ने कहा हम जानते थे कि हम असभ्य हैं, अंग्रेज सभ्य हैं। अंग्रेजों से सभ्यता सीखनी होगी। अत: कार साहब से जो सभ्यता सीखी थी उसी सभ्यता के अनुसार ही मैंने उनका स्वागत किया था। ये थे विद्यासागर।

विद्यासागर के साथ अधिकारियों के बार-बार मतभेद हुए थे। इन्हीं मतभेदों की वजह से ही उन्होंने संस्कृत कॉलेज का काम छोड़ दिया था। उस समय वे कर्जवान हो गये थे। दूसरों ने सवाल उठाया विद्यासागर खाओगे क्या? विद्यासागर ने कहा 'मैं आलू-परवल की दुकान खोल लूंगा, किराने की दुकान कर लूंगा। जरूरत होगी तो एक वक्त खाऊंगा, नमक रोटी खाऊंगा लेकिन जिस नौकरी में इज्जत नहीं, वह नौकरी नहीं करूंगा।' उस युग में विद्यासागर ने मर्यादाबोध की यह शानदार मिसाल कायम की थी। डिप्युटी वायसराय के साथ मुलाकात करने के लिए जो बेरोकटोक जा सकते थे उनकी एक लिस्ट थी। विद्यासागर का नाम बेरोकटोक वाली सूची में था। विद्यासागर ने कह दिया, 'मेरा नाम काट दीजिये। जहां आम जनता को जाने का अवसर नहीं, वहां मैं नहीं जाऊंगा।' ये थे विद्यासागर। विद्यासागर एक बड़े आदमी के घर बैठे हुए थे। ऊपर लगातार पंखा चल रहा था। नामी-गिरामी सब लोग थे। एक दरबान एक चिठ्ठी लेकर आया। चोटी से एड़ी तक पसीना बह रहा था। विद्यासागर ने उसे पास बैठाना चाहा। वह संकोचवश बैठ नहीं रहा था। जोर देकर बैठाया। कुछ देर बाद वह चला गया। बाकियों ने रोष व्यक्त करते हुए कहा आपने एक दरबान को हमारे साथ बैठा दिया, ये तो हमारे प्रति असम्मान है। विद्यासागर ने जानना चाहा किस आधार पर उत्तर दूं? तुम्हारे अनुसार यदि उत्तर दूं तो यह दरबान मैथिली ब्राह्मण है। तुम्हारे बाप-दादा इनकी चरणधूली लेते थे। जबकि मेरे अनुसार, हमें अब चार सौ-पांच सौ रुपये वेतन मिलता है और उसे मिलते हैं पाँच रुपये। मेरे पिताजी ने भी एक समय कोलकाता शहर में पाँच रुपये वेतन पर नौकरी की थी। ये थे विद्यासागर। विद्यासागर के जीवन के अंतिम पड़ाव में राष्ट्रीय कांग्रेस का तब गठन हो रहा था। इसमें प्रयासरत लोगों का हालचाल देखकर उन्होंने तीखे शब्दों में आलोचना करते हुए कहा था, 'बाबू लोग भाषण झाड़ रहे हैं, देशोद्धार कर रहे हैं, फिर भी देश के लाखों-लाख लोग भूखे मर रहे हैं, इसकी कोई जानकारी नहीं रखते हैं'। इस कांग्रेस के प्रतिनिधियों ने उनको एक सभा में आमंत्रित किया तो उन्होंने सवाल किया, 'अंग्रेजों के खिलाफ जरूरत पड़ने पर तलवार उठा सकोगे?' उनके द्वारा उत्तर न दिए जाने पर कहा, 'हमारे बिना ही तुम लोग आगे बढ़ो'। कितनी असाधारण दूरदृष्टि से उस समय उन्होंने समझौतावादियों को पहचान लिया था, बाद के इतिहास ने इसकी पुष्टि कर दी।

जीवन के अंतिम पहर में स्वास्थ्य लाभ के लिए उन्हें दोबारा कारमाटार जाने के लिए कहा गया। उन्होंने कहा, मैं नहीं जाऊंगा। मैंने देखा है वहां संथाल लोग दिन में एक सेर चावल, आधा सेर दाल, आलू यह सब खाते थे। अब एक छटांक सत्तू भी उन्हें नसीब नहीं होता है। बिना खाए रह जाते हैं और वहाँ जाकर में अच्छी चीजें खाऊंगा–ये मेरे लिये संभव नहीं है। रो पड़े, गये नहीं। उसके कुछ दिनों बाद ही उनकी मृत्यु हो गई। यह था विद्यासागर का चरित्र। आप जानते हैं कि विद्यासागर ने अपने इकलौते पुत्र को इस बात पर ताज्य पुत्र करार दे दिया था कि उसने अपनी पत्नी का अपमान किया था। विद्यासागर की जितनी भी सम्पत्ति थी, उसे 45 अभावग्रस्त परिवारों को बांट कर दे गये थे। विद्यासागर का वह वसीयतनामा विख्यात है। दान दिया डिस्पेंसरी को, फलां स्कूल, फलां विधवा माँ, फलां विधवा लड़की, फलां बुर्जुग को–इस तरह अपनी सारी सम्पत्ति दान में दे गए। इसके अलावा एक और घटना सुनकर आप हैरान हो जाएंगे। 19 अप्रैल 1925 को प्रकाशित आनंद बाजार पत्रिका में उस समय की एक महिला डॉक्टर विधुमुखी चौधरी ने एक अपील जारी की। उन्होंने कहा, 'विद्यासागर की मझली बेटी मेरे पास आई थी आर्थिक मदद मांगने के लिए। उसकी देखभाल करने वाला कोई नहीं है। उसी से सुना है कि विद्यासागर की छोटी बेटी काशी में किसी घर में काम करके पेट पाल रही है। जबकि इस देश में ऐसा कोई आदमी नहीं जिसे प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से विद्यासागर की सहायता न मिली हो।' इस तरह उन्होंने देशवासियों से विद्यासागर की लड़कियों के लिए सहायता की अपील की थी। मैं उनके द्वारा विधवा विवाह चालू कराने, बालविवाह पर रोक लगाने के लिए किए गए आंदोलन के विषय का आज और उल्लेख नहीं कर रहा हूँ।

देश के विकास के महत्व पर विचार की कसौटी

हमारे दिल्ली बैठे नेतागण, राज्य के नेतागण जो अभी सरकारी सत्ता में बैठे हैं, सभी घोषणा कर रहे हैं कि

(शेष पृष्ठ 4 पर)

ऑल इण्डिया एमएसएस का प्रथम म.प्र. राज्य सम्मेलन सम्पन्न

ग्वालियर (म.प्र.) : 28, 29 अगस्त को ऑल इण्डिया महिला सांस्कृतिक संगठन (एआईएमएसएस) म.प्र. का प्रथम राज्य स्तरीय सम्मेलन ग्वालियर में सम्पन्न हुआ। ऑल इण्डिया एमएसएस की राष्ट्रीय अधयक्षा श्रीमती छाया मुखर्जी इस सम्मेलन में मुख्य वक्ता के रूप में मौजूद रहीं।

28 अगस्त को 14 जिलों की 400 महिलाएं इंदरगंज चौराहे, ग्वालियर से एक विशाल रैली के रूप में रोषपूर्ण नारे लगाती हुई महाराज बाड़ा पहुँची। महिलायें म.प्र. में शराबबंदी की माँग कर रहीं थीं। महिलाओं, बच्चियों पर बढ़ रहे अपराध रोकने और अश्लीलता व हिंसा का प्रदर्शन रोकने के नारे भी लगा रही थी। महाराज बाड़ा पहुँचकर रैली ने सभा का रूप ले लिया और खुला अधिवेशन प्रारंभ हुआ। एम.एस.एस. की म.प्र. राज्य संयोजन कमेटी सदस्य व भोपाल प्रभारी श्रीमती जॉली सरकार द्वारा प्रारंभिक भाषण दिया गया। इस प्रदेश सम्मेलन की स्वागत समिति के सदस्य जाने-माने समाजसेवी श्री सुधीर सप्रा ने महिला आन्दोलन के प्रति समर्थन व्यक्त किया और महिला प्रतिनिधियों का अभिनंदन किया। अन्य स्वागत समिति सदस्या, मशहूर अधिवक्ता व सामाजिक कार्यकर्ता सुधा शर्मा ने म.प्र. में महिला आन्दोलन की बेहद जरूरत को रेखांकित किया, शराबबंदी का समर्थन किया और सम्मेलन में महिलाओं की विशाल भागीदारी पर हर्ष व्यक्त किया। सभा को सम्बोधित करते हुए एसयूसीआई (कम्यूनिस्ट) पार्टी के प्रदेश सचिव कॉ. प्रताप सामल ने बताया देश में जहाँ-जहाँ शराब-विरोधी आन्दोलन हुये हैं, उनमें ऑल इण्डिया एमएसएस की अग्रणी भूमिका रही है। उन्होंने उम्मीद जताई कि शराब व अन्य नशों, अश्लीलता के खिलाफ आकार लेने वाला आन्दोलन आगे बढ़कर इस निर्मम शोषणकारी, पूंजीवादी व्यवस्था के खिलाफ आन्दोलन में परिणत होगा और महिला मुक्ति का आन्दोलन मानव मुक्ति के आन्दोलन का परिपूरक बनेगा।

मुख्य वक्ता श्रीमती छाया मुखर्जी ने कहा कि पूंजीवादी व्यवस्था ही सभी समस्याओं को जन्म दे रही है। आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, हर क्षेत्र में आज संकट व्याप्त है। महिलाओं को पुरुष-प्रधान मानसिकता और बाजारवादी पितृसत्तायुक्त मानसिकता को समाप्त करने के लिए और स्वयं भी उससे मुक्त होने के लिए लड़ना होगा।

नशाखोरी, अश्लीलता, हिंसा, नैतिक पतन समाज में तेजी से बढ़ रहे है जिनके खिलाफ विशाल आन्दोलन खड़े करने होंगे।

महंगाई, बेरोजगारी के खिलाफ पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर लड़ना होगा। तभी समाज महिलाओं के प्रति अपना नजरिया बदलेगा और इन्सान की तरह महिलाओं को मर्यादा देने के लिए विवश होगा। एम.एस.एस. की म.प्र. राज्य संयोजिका श्रीमती रचना अग्रवाल द्वारा अध्यक्षीय उद्बोधन दिया गया।

29 अगस्त को प्रतिनिधि अधिवेशन नाट्य मंदिर, ग्वालियर में सम्पन्न हुआ, जिसमें 12 जिलों से 123 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। श्रीमती जॉली सरकार द्वारा राजनैतिक रिपोर्ट का मसौदा पढ़कर सुनाया गया, जिस पर अनेक प्रतिनिधियों ने बात रखी। सांगठनिक रिपोर्ट रचना अग्रवाल द्वारा रखी गई। इसके बाद राज्य संयोजन समिति सदस्या श्रीमती जाग्रति शर्मा द्वारा प्रथम राज्य कमिटी का प्रस्ताव रखा गया जिसे सर्वसम्मति से पारित किया गया। नव निर्वाचित प्रदेश कमेटी में राज्य अध्यक्षा श्रीमती जॉली सरकार, राज्य सचिव श्रीमती रचना अग्रवाल, उपाध्यक्ष श्रीमती चंद्रा पात्र, श्रीमती जाग्रति शर्मा, श्रीमती संगीता आर.बी., श्रीमती आभा भूवरकर, कार्यालय सचिव श्रीमती सुनिधि चौहान, सचिव मण्डल में प्रीति पटवर्धन, आर्शी खान, सुचेता सक्सैना, मनस्वी रिठोरिया, विधि श्रीवास्तव चुनी गई। 11 सदस्यीय कार्यकारिणी व 30 सदस्यीय राज्य परिषद भी चुनी गई। श्रीमती छाया मुखर्जी ने प्रतिनिधि सम्मेलन में दिये गये अपने वक्तव्य में नव निर्वाचित कमेटी के नेतृत्व में प्रदेश में जोरदार महिला आंदोलन गठित करने की अपील की।

खुले अधिवेशन व प्रतिनिधि सम्मेलन में महिलाओं द्वारा प्रस्तुत किए गये रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम और प्रदर्शनी ने सभी का मन मोह लिया। नारी मुक्त-संघर्ष के जोरदार नारों के साथ सम्मेलन सम्पन्न हुआ।

गोवा में युवाओं की सभा

गोवा : सभा को सम्बोधित करते हुए एआईडीवाईओ की महासचिव कॉ. प्रतिभा नायक

एआईडीवाईओ के दूसरे अखिल भारतीय सम्मेलन की तैयारी में मिरामार, उत्तरी गोवा के धिम्पे कॉलेज में 31 अगस्त को नौजवानों की एक मीटिंग हुई। मुख्य वक्ता एआईडीवाईओ की महासचिव कॉ. प्रतिभा नायक थी।

एआईडीवाईओ के उपाध्यक्ष कॉ. ए रामाजनप्पा ने भारत में नौजवानों की समस्याओं और नौजवानों के फर्ज पर चर्चा की। कॉलेज के छात्रों ने भी बताया कि गोवा में उनकी समस्याएं क्या हैं और जानना चाहा कि उनको कैसे हल किया जाये। चर्चा बहुत ही जीवन्त रही। अंत में छात्रों ने एआईडीवाईओ के सदस्य के तौर पर अपने नाम लिखवाये और गोवा में संगठन बनाने का संकल्प लिया।

बेरोजगारी, महंगाई, नशाखोरी, अश्लील प्रसारण तथा साम्प्रदायिकता के खिलाफ

एआईडीवाईओ का तीसरा दिल्ली राज्य युवा सम्मेलन

दिल्ली : एआईडीवाईओ का तीसरा दिल्ली राज्य युवा सम्मेलन 28 अगस्त 2016 को दिल्ली के करोल बाग क्षेत्र में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। सम्मेलन में दिल्ली के विभिन्न इलाकों से सैंकड़ों नौजवानों ने पूरे जोश के साथ भाग लिया। बेरोजगारी पर रोक लगाओ, नशाखोरी पर पूर्ण प्रतिबंध लगाओ, अश्लील प्रसारण नहीं चलेगा आदि नारे लगाते हुए खालसा कॉलेज देव नगर से रैली के रूप नौजवान खुले अधिवेशन में शामिल हुए। सम्मेलन की शुरुआत संगठन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष दीपक कुमार द्वारा झण्डा आरोहण और एसयूसीआई (सी) दिल्ली राज्य सचिव कॉ. प्राण शर्मा सहित संगठन के अन्य राज्य कमेटी सदस्यों तथा एआईडीएसओ-एआईएमएसएस के राज्य नेताओं द्वारा शहीद वेदी पर फूल अर्पण कर शहीदों को श्रद्धांजली के साथ हुई। सम्मेलन के शुरुआत में जनवादी गीत पेश किए गए। अपने उद्घाटन भाषण में सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए कॉ. प्राण शर्मा ने राष्ट्रीय व अतंर्राष्ट्रीय परिस्थितियों का विश्लेषण किया तथा प्रतिक्रियावादी ताकतों के खिलाफ जनवादी आंदोलन गठित करने के लिए युवाओं से अपील की। सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए संगठन के राष्ट्रीय सचिवमण्डल के सदस्य लोकेश शर्मा ने कहा कि आज युवा वर्ग ही है जो देश की तमाम समस्याओं के खिलाफ आंदोलन गठित कर सकता है। युवाओं को मनीषियों व क्रांतिकारियों के जीवन से सीखना होगा। उन्होंने कहा कि सही विचारधारा से संचालित संगठन ही एक दिन जीत हासिल कर सकता है। खुले अधिवेशन को राज्य उपाध्यक्ष गिरिश कुमार तथा राज्य सचिव प्रकाश देवी ने सम्बोधित किया। अधिवेशन की अध्यक्षता राज्य अध्यक्ष राकेश कुमार ने की।

प्रतिनिधि अधिवेशन में राजनैतिक प्रस्ताव के अलावा नशाखोरी व साम्प्रदायिकता पर भी प्रस्ताव पेश किये गये। जिन पर सभी प्रतिनिधियों ने अपने विचार व्यक्त किए। सांगठनिक रिपोर्ट प्रकाश देवी द्वारा पेश की गई। सम्मेलन में 11 सदस्यीय नई कमेटी का चुनाव हुआ जिसमें अध्यक्ष प्रकाश देवी तथा सचिव अमरजीत बनाये गये इसके अलावा 20 सदस्यीय राज्य काउन्सिल बनायी गयी।

नवनिर्वाचित कमेटी तथा प्रतिधिनियों को बधाई देते हुए राष्ट्रीय उपाध्यक्ष दीपक कुमार ने कहा कि युवाओं के जीवन से जुड़ी तमाम समस्याओं के खिलाफ जनवादी व सांस्कृतिक आंदोलन गठित करना समय की मांग है। साथ ही उन्होंने 23-24 अक्टूबर को पटना मे होने वाले अखिल भारतीय सम्मेलन को सफल बनाने की अपील की। जोरदार नारों के साथ सम्मेलन की समाप्ति हुई।

शासक वर्ग तोड़ देना चाहता है युवाओं की नैतिक रीढ़

(पृष्ठ 2 का शेष)

देश का खूब विकास हो रहा है। यह क्या वही विकास है। 29 जुलाई को भारत की इस श्रेष्ठ संतान को याद नहीं किया गया क्यों? विकास किसे कहते हैं? मैं यदि मान भी लूं कि देश का बहुत आर्थिक विकास हो रहा है, लेकिन इससे इन्सान तैयार हो रहे हैं क्या, उन्नत चरित्र पैदा हो रहे हैं क्या? जिसके पास बहुत पैसा है, बहुत से बंगले-गाड़ी हैं वह आदमी बड़ा या चरित्र बड़ा, इन्सानियत बड़ी? किस कसौटी पर बड़पन का विचार होगा? एक देश के भी बड़प्पन का विचार किस कसौटी पर होगा? उस देश के लोगों का चरित्र, इन्सानियत, नैतिकता कितनी उन्नत हुई है इसी आधार पर तो यह निर्धारित होगा।

पांच दिन बाद एक और दिवस आएगा 11 अगस्त। हम जब मां की गोद में थे पूरे बंगाल, पूरे भारतवर्ष की माताएं अपनी आंखों के आंसुओं में भीगा ये गीत 'एक बार विदाय दे मां घूरे आसी' गाती थी। इन्हीं खुदीराम को याद करके ही नेताजी सुभाषचंद्र बोस का संघर्ष शुरू हुआ। उस समय वे रेवेंशा स्कूल के छात्र थे। उनके शिक्षक श्रद्धेय बेनीमाधव दास से प्रेरित होकर सुभाषचंद्र जब छठी कक्षा के छात्र थे 11 अगस्त को अरंधन (चूल्हा नहीं जलेगा), अनशन करके मनाया था। इसी 18 वर्ष के किशोर ने पूरे भारत को उस समय जगाया था। अदालत में न्यायधीशों का फैसला सुनकर हंसे थे। फांसी के तख्ते पर चढ़ कर हंसे थे। जहां से 'हांसी हांसी पोरबो फांसी' बात आई थी। आप में से बहुत लोग नहीं जानते कि शहीद-ए-आजम भगतसिंह को जिस दिन फांसी हुई जेल के एक कैदी ने उनसे पूछा, तुम्हारे कोई रिश्तेदार आए नहीं? असल में उनके रिश्तेदारों को पता ही नहीं था कि उस दिन फांसी होगी। उनको फांसी देने की तारीख 24 मार्च तय थी। गांधीजी के अनुरोध पर 23 मार्च को फांसी दी गई। अत: रिश्तेदार नहीं आ सके। भगतसिंह ने कहा, 'मेरे रिश्तेदार शहीद खुदीराम, शहीद करतार सिंह सराभा हैं।' करतार सिंह सराभा पंजाब के एक और अमर शहीद हुए हैं। भगतसिंह ने कहा था, 'मेरा खून खुदीराम का खून है। एक ही खून से हम आए हैं।' आज देश का इतना विकास हो गया, फिर भी कौन इनको याद करता है? कौन याद करता है देशबंधु को, सुभाषचंद्र को? यहां तक कि रवीन्द्रनाथ को भी कौन याद करता है? रवीन्द्रनाथ जिंदा हैं रवीन्द्र संगीत में, वह भी प्रेम, प्रकृति, धर्म संबंधित गीतों के जरिये। कितने लोग जानते हैं जन्मदिन का अंतिम भाषण 'सभ्यता का संकट'-इन्ही रवीन्द्रनाथ ने गहरे दुख के साथ कहा था, 'शांत भाव से साहित्य के रसास्वादन के उपकरणों की विशिष्ठता से एक दिन मुझे बाहर आना पड़ा था। बाहर आकर देखा देश भयंकर रूप से दुर्दशाग्रस्त है। एक समय मेरे जीवन की शुरूआत में यूरोपीय सभ्यता को मैने हृदय से ग्रहण किया था। आज यूरोपीय सभ्यता के प्रति मेरे विश्वास का दिवाला निकल गया है।' रवीन्द्रनाथ पूरे स्वदेशी आंदोलन के युग में चाहते थे कि स्वाधीनता आंदोलन शांतिपूर्ण तरीके से हो। इस मायने में वे गांधीजी के समर्थक थे। उन्होंने ही जीवन के अंतिम पड़ाव में लिखा था, 'नागिनें चारों ओर छोड़ रही हैं जहरीला श्वास, शांति की कोमल वाणी सुनाना है व्यर्थ का परिहास। जाने से पहले इसीलिए आह्वान कर रहा हूँ, दानवों के साथ संघर्ष करने का जो हो रहे हैं तैयार घर-घर में।' जीवन के अंतिम पड़ाव में रवीन्द्रनाथ का चिंतन बदला था। सोवियत समाजवाद का अभिनंदन किया था। इस रवीन्द्रनाथ को यहाँ के रवीन्द्र प्रेमी क्या जानते, पहचानते, याद करते हैं? शरत्चंद्र को पहचानते हैं? शरत्चंद्र के 'पथ के दावेदार' ने पूरे भारत में एक समय हलचल मचा दी थी। उन्होंने दिखाया था कि क्रांति पथ की मांग क्या है? भयभीत होकर ब्रिटिश साम्राज्यवाद ने किताब को गैर कानूनी घोषित कर दिया, फिर भी छिप-छिप कर लोग किताब पढ़ते थे, प्रेरित होते थे। उन्होंने मजदूर क्रांति का आह्वान किया था। श्रीकांत उपन्यास में शरत्चंद्र ने दिखाया था, रेलवे में खुदाई का काम करने वाले मजदूर, शराब पीते हैं, अश्लील हरकतों में मजा लेते हैं जो चीज आज बहुत से घरों में मोहल्ले-मोहल्ले में देख रहे हैं। शरत्चंद्र को इसका आभास हो गया था। एक बच्चा हैजे से मर रहा है। उसको एक घूंट पानी देने वाला कोई नहीं है। कह रहे हैं कि गाँव में जब ये थे तो ऐसे नहीं थे। मोहल्ले में पड़ोसी के संकट के समय लोग उसका साथ देते थे। आज उनकी यह मानसिकता नहीं है। कह रहे हैं, 'सभ्यता की दुहाई देते हुए धनियों के धन लोभ ने, इंसान को हृदयहीन पशु में परिणत कर दिया है।' पूंजीवादी सभ्यता को इस तरह धिक्कार रहे हैं। उसके बाद बोल रहे हैं 'इन्सान का मरना मुझे दुख नहीं पहुंचाता है, मैं जानता हूँ मनुष्य का जन्म है तो मृत्यु भी है। दुख होता है इन्सानियत को मरता देखने पर।' मजदूरों को कह रहे हैं, जो सभ्यता तुम्हें इस सर्वनाश के रास्ते पर ले आई है यदि ढोना ही है तो इसे जल्दी से ध्वस्त करने की दिशा में ले जाओ। यही सब बातें एक समय बंगाल के यौवन को आंदोलित करती थी, भारतवर्ष के यौवन को आंदोलित करती थी। यही सब पढ़ कर ही तो सूर्यसेन, प्रीतिलता, विनय-बादल-दिनेश आदि आए थे। इनको कौन याद करता है? क्यों याद नहीं करते हैं? यही क्या देश का विकास है? यही क्या देश की प्रगति है? क्यों हो रहा है यह हमला? इन प्रश्नों का उत्तर दिया है कॉमरेड शिवदास घोष ने। वे कह रहे हैं कि भारतवर्ष का शासक वर्ग देश के नैतिक चरित्र को पूरी तरह तबाह करने के षड्यंत्र में लगा हुआ है। वे बहुत ही घाघ हैं। वे जानते हैं कि हजारों अत्याचार, दमन-उत्पीड़न करके भी, भूखा रखकर भी, एक राष्ट्र को, एक देश के जनसाधारण को सिर्फ पुलिस और मिलट्री के बल पर ज्यादा दिन तक दबा कर नहीं रखा जा सकता है। सभी युगों के स्वेच्छाचारी शासकों के अत्याचार का इतिहास एक ही बात बतलाता है कि शोषण और दमन के बल पर, पुलिस प्रशासन और मिलिट्री के दम पर आखिर तक जनशक्ति को दबा कर नहीं रखा जा सकता है, सत्ता की रक्षा नहीं की जा सकती है। जनशक्ति सिर ऊँचा कर उठ खड़ी होती है यदि उनको सही क्रांतिकारी आदर्श का बोध हो जाए और उनका नैतिक बल अटूट रहे। यही बात कॉमरेड शिवदास घोष ने कही थी। आज हमारे देश की तरफ जरा नजर डालकर देखिए चारों तरफ कितनी भयावह परिस्थिति है। हाल ही में एक किशोर की मृत्यु को लेकर मीडिया में मंथन हो रहा है। स्कूली बच्चे लड़का-लड़की जन्मदिन मनाने के लिए शराब की पार्टी कर रहे हैं। स्कूल-कॉलेजों में अब शराबखोरी, गली-मोहल्ले के क्लबों में शराबखोरी, गली के नुक्कड़ों पर शराबखोरी की बाढ़ आई हुई है। हालांकि एक समय इस देश में स्वदेशी आंदोलन शुरू हुआ था नशीले पदार्थों को त्यागने के साथ और अब सरकार कह रही है शराब की दुकानें और बढ़ाओ।

शासक वर्ग तोड़ देना चाहता है युवाओं की नैतिक रीढ़

केन्द्रीय सरकार चाहती है कि शराब का प्रसार बढ़े। सीपीआई(एम) जब इस राज्य में सरकार में थी, तब उसने शराब की दुकानें बढ़ाई थी, मौजूदा तृणमूल सरकार और भी शराब की दुकानें खोल रही है। टैक्स से सरकार की आय बढ़ाना इसकी वजह बताया जा रहा है। उनका उद्देश्य है शराब पीओ, गांजा पीओ, ड्रग लो, नशा करो। भूल जाओ विद्यासागर को, भूल जाओ विवेकानंद, रवीन्द्रनाथ, शरत्चंद्र, देशबंधु, सुभाषचंद्र को। हमारे बचपन में हमारे शिक्षक, अभिभावक इन सब मनीषियों का नाम बता कर कहते थे ये प्रात: स्मरणीय हैं। इसी तरह जीवन के शुरू में हमारे मन में महानता के प्रति आकर्षण ने जन्म लिया था। यह न होता तो हम कॉमरेड शिवदास घोष को पहचान नहीं पाते, जान नहीं सकते थे। आज पूरे देश में स्वदेशी आंदोलन की शानदार परम्परा को, नव जागरण की परम्परा को शासक वर्ग पूरी तरह खत्म कर रहा है। उस युग के महान चरित्रों को विस्मृति के गर्त में डूबो रखा है। अब आदर्श के रूप में स्थापित किया जा रहा है फिल्म स्टारों, हीरो-हीरोइनों को। उनकी गंदी प्रेम कहानियों, नंगी तस्वीरों और झांसेबाजी की कहानियों को जबरदस्त रूप से प्रचारित किया जा रहा है। टी.वी. के माध्यम से गंदी फिल्में, ब्लू फिल्में, मोबाइल के माध्यम से और भी कितने गंदे तरीके से ये सब किया जा रहा है। जितना शराब का प्रसार बढ़ रहा है उतनी ही महिलाओं की इज्जत खतरे में पड़ रही है। क्या ये सब बलात्कार, सामूहिक बलात्कार, हत्याएं आदि विद्यासागर ने देखी थीं? क्या रवीन्द्रनाथ, शरत्चंद्र ने देखी थी? क्या अंग्रेजी शासन में ये सब होता था? तीन वर्ष की बच्ची तक से बलात्कार कर हत्या की जा रही है। 60 वर्ष की बूढ़ी महिला से बलात्कार कर खून किया जा रहा है। सामूहिक बलात्कार हो रहा है। प्यार के नाम पर धोखा देकर होटल में ले जाकर दोस्तों के साथ मिलकर सामूहिक बलात्कार हो रहा है। उसकी वीडियो बना कर उस वीडियो को बाजार में बेच रहे हैं। ऐसी खबर भी आती है कि लड़की पिता के खिलाफ बलात्कार का आरोप लगा रही है। इसके अलावा पैसे के लोभ में खुद की लड़की को, पत्नी को, बहन तक को बेच रहे हैं, बूढ़े माँ-बाप को सड़क पर बैठा दे रहे हैं, सम्पत्ति के लोभ में हत्या कर दे रहे हैं। कितने भयंकर हालात हैं? स्नेह, माया-ममता-नैतिकता लगभग लुप्त हो गई है। बीजेपी के राज में, कांग्रेस के राज में, सीपीआई(एम) के राज में, तृणमूल के राज में यही हो रहा है विकास।

अब और नैतिकता नहीं दे सकता धर्म

ये क्या यूं ही ऐसे ही हो रहा है? ये क्या इतिहास की अनिवार्य निष्ठुर नियति है? कॉमरेड शिवदास घोष बता गए हैं, यह शासक वर्ग का षड्यंत्र है। ये चाहते हैं कि इन्सानियत ध्वस्त हो जाए, नैतिकता ध्वस्त हो जाए, आदमी शैतान बन जाए। जो बलात्कार करते हैं, सामूहिक बलात्कार करते हैं वे जन्मजात यह चरित्र लेकर पैदा नहीं हुए थे। यह चरित्र उन्हें कहाँ से मिला? जानवर तो जानवर के गुणधर्म और विशेषता लेकर ही जन्म लेता है। लेकिन इन्सान इन्सान की चारित्रिक नैतिक विशेषताएं लेकर नहीं, बल्कि शरीरिक विशेषताएं लेकर पैदा होता है। विवेक, प्रवृत्ति, न्याय-अन्याय बोध वह समाज से पाता है, सामाजिक जीवन से पाता है, सामाजिक नैतिकता से पाता है। धर्म अब नैतिकता नहीं दे सकता है। एक समय सुदूर अतीत में जब दास प्रथा के खिलाफ, सामाजिक अन्याय के खिलाफ संघर्ष किया था तब धर्म ने मूल्यबोध-नैतिकता प्रदान की थी। धर्म को आधार करके अनेक महापुरुष समाज में पैदा हुए थे। फिर इतिहास के गतिपथ पर जब धर्म बेजान हो गया, धर्म जब अधर्म बनकर खड़ा हो गया, तब यूरोपीय नवजागरण धर्म आधारित राजतंत्र के खिलाफ, सामंतवाद के खिलाफ संघर्ष करने लगा तो उसने धर्मांधता के खिलाफ, धार्मिक चिंतन के खिलाफ विज्ञान को हथियार बनाया था। वस्तुवाद, यांत्रिक वस्तुवाद, अज्ञेयवाद, सेक्युलर ह्युमेनिज्य, नवजागरण का उफान, मानवतावादी संस्कृति, जनतांत्रिक संस्कृति ये सब व्यापक चिंतनगत आंदोलन के रूप में यूरोप के अंदर दिखाई दिये थे। इसके प्रभाव से समानता, मैत्री, स्वतंत्रता का नारा उठा था। माँग उठी थी, राजतंत्र की बजाय प्रजातंत्र चाहिए। प्रजा ही तय करेगी अपना न्याय कानून, संविधान, चुने हुए प्रतिनिधि ही उनके निर्धारित संविधान के मुताबिक देश चलाएंगे। बुर्जुआ जनतंत्र यही सब घोषणा करके आया था। जनता के द्वारा, जनता के लिए, जनता की ही सरकार-'बाई द पीपल, फॉर द पीपल, ऑफ द पीपल' यही आह्वान हुआ था। इसी समय जराग्रस्त धार्मिक नैतिकता के बदले मानवतावादी जनतांत्रिक नैतिकता आई थी, इन्सानियत का नया एहसास आया था। उसी समय यूरोप में इस आंदोलन को केन्द्र करके ज्ञान-विज्ञान, साहित्य दर्शन के ज्ञाता अनेक प्रकाण्ड पण्डित पैदा हुए थे। हमारे देश में पश्चिम के इस चिंतन के प्रभाव से नवजागरण की शुरूआत हुई थी, जिसके प्रतिनिधि थे राममोहन, विद्यासागर, ज्योतिबा राव फूले, बाद में रवीन्द्रनाथ-शरत्चंद्र-नजरूल आदि राजनैतिक आंदोलन में देशबंधु, लाला लाजपत राय, तिलक सुभाषचंद्र आदि आए। और भी असंख्य स्वतंत्रता सेनानी और शहीद आए। उस समय स्वदेशी आंदोलन ने चरित्र और इन्सानियत पैदा की थी। लेकिन आजादी आंदोलन का जो राष्ट्रीय आदर्श था उसको आधार करके जो नैतिकता पनपी थी उसने अब अपनी उपयोगिता खो दी है। क्योंकि स्वाधीनता के लिए लड़े थे इस देश के लोग, गरीब लोग। लेकिन नेतृत्व में था पूंजीपति वर्ग- टाटा-बिड़ला आदि। उनका लक्ष्य था अंग्रेज शासक की जगह वे सत्ता पर कब्जा करेंगे। विदेशी साम्राज्यवादी शोषण के बदले देशी पूंजीवादी शोषण कायम करेंगे। इस संबंध में चेतावनी दी थी नेताजी सुभाषचंद्र, शहीद-ए-आजम भगतसिंह ने। इस संबंध में शरत्चंद्र, नजरूल ने चेतावनी दी थी लेकिन देश के ज्यादातर लोगों तक यह चेतावनी पहुंच ही नहीं पाई।

(शेष पृष्ठ 5 पर)

पूंजीवाद की ताबेदार पार्टियां लाई हैं 'अपनी जेब भरने' की राजनीति

(पृष्ठ 4 का शेष)

आम आदमी ने उस समय भी राजनीति नहीं समझनी चाही, अब भी नही समझना चाहता कि किस पार्टी की क्या है नीति

कॉमरेड शिवदास घोष ने दिखाया था, देश में स्वाधीनता आंदोलन की दो धाराएं थी। एक समझौतावादी, आवेदन-निवेदन की, जिसके नेता गांधीजी थे। और दूसरी थी समझौताहीन क्रांतिकारी धारा। खुदीराम से शुरू करके भगतसिंह, नेताजी सुभाषचंद्र इसके पैरोकार थे। इस देश के मजदूर क्रांति से भयभीत पूंजीपतियों ने गांधीजी को सामने रखकर राष्ट्रीय कांग्रेस के पीछे थैलियों के मुंह खोल दिये थे, अखबारों में गांधीवादियों के पक्ष में धुंआधार प्रचार किया गया। लेकिन सुभाषचंद्र बोस सहित क्रांतिकारियों के पक्ष में बुर्जुआ अखबारों ने कोई प्रचार नहीं दिया। परिणामत: इस देश के लोग समझ ही नहीं पाए कि गांधीजी के नेतृत्व के साथ नेताजी का क्या तफर्का है, क्रांतिकारियों का क्या कहना है ये समझ ही नहीं पाए। अंधे की तरह गांधीवादी कांग्रेस का समर्थन किया था। इन नेताओं ने भी चाहा था कि देश के लोग अंधता से उनका समर्थन करें। इसलिए इस देश के लोग राजनीति समझ नहीं सके। एक बात अभी भी लोग दुख के साथ कहते हैं सभी पार्टियां एक जैसी हैं, सभी ठगती हैं। चुनाव से पहले सब पार्टियां ही बड़ी-बड़ी बातें करती हैं, अनेक वादे करती हैं। लेकिन चुनाव के बाद जो लंका में जाता है रावण हो जाता है। रामायण की कहानी के मुताबिक राम लंका में गये थे लेकिन रावण नहीं हुए। लक्ष्मण, सीता, हनुमान कोई भी लंका में जाकर रावण नहीं हुआ। लेकिन रामायण में एक शिक्षा है। लंका का युद्ध नहीं होता यदि सीता रावण को पहचान जाती। रावण आया था सन्यासी वेश में छल करने के लिए और सन्यासी वेश को देखकर सीता विभ्रांत हो गई थी। उस युग में भी क्रांति-विरोधी कांग्रेस नेतृत्व को देश के लोग पहचान नहीं पाये थे। समझ नहीं पाये थे कि क्यों खुदीराम, भगतसिंह को गांधीजी मर्यादा नहीं देते, कांग्रेस मर्यादा नहीं देती। समझ नहीं पाये कि क्यों सुभाषचंद्र बोस को कांग्रेस के अध्यक्ष से पद से हटना पड़ा था? क्यों सुभाषचंद्र बोस को कांग्रेस से निलंबित किया गया था?

आम आदमी उस समय भी राजनीति समझना नही चाहता था, आज भी नहीं चाहता है, किस पार्टी की क्या नीति है समझना नहीं चाहता है। उनका मनोभाव होता है हम आम आदमी हैं घर गृहस्थी करते हैं, जो भी हो नेतागण तय करेंगे। किसके नेता? समाचार पत्रों मे जिनका खूब प्रचार है, रेडियो पर भरपूर प्रचार है, वे ही नेता हैं। उस समय सुभाषचंद्र बोस के वक्तव्य का अखबार या रेडियो प्रचार नहीं करते थे। खुदीराम, भगतसिंह का प्रचार नहीं करते थे। गांधीवादियों का भरपूर प्रचार करते थे। अभी भी देखिए अखबार, रेडियो, टी.वी. कॉमरेड शिवदास घोष की बात का प्रचार नहीं करते, हमारी पार्टी के बयान को प्रचारित नहीं करते हैं। क्योंकि उस समय पूंजीपति आजादी आन्दोलन में क्रांतिकारियों से भय खाते थे आज भी उसी तरह क्रांतिकारी के रूप में हमारी पार्टी को वे आतंकित नजरों से देखते हैं। और लोग राजनीति समझते नहीं, चिंतन करते नहीं। अखबार, टी.वी., रेडियो इन्ही सब को देखकर तय करते हैं किसके पीछे दौड़ें। और 'विकास', 'परिवर्तन', 'अच्छे दिन', 'गरीबी हटाओ'-ये सब एक पर एक नारे धुरंधर सत्तालोलुप पार्टियां उठाती रहती हैं और अखबार रेडियो टीवी उसको प्रचारित करते हैं। उसके बाद क्या होता है आप अपनी नजरों के सामने देख रहे हैं। बार-बार ठगे जा रहे हैं। यही नेता ही रावण की तरह हैं जो जनसेवक का चोला पहनकर लोगों को ठगते हैं।

कॉमरेड शिवदास घोष ने दिया मौजूदा जमाने में उपयोगी नये मूल्यबोधों का पता

छोटे-छोटे लड़का-लड़की आज इस तरह जो बर्बाद हो रहे हैं शराब पी रहे हैं, नशा कर रहे हैं, अश्लीलता-यौनता में मस्त हो रहे हैं, जिसे देखकर अध्यापकों, अभिभावकों, चिंतनशील लोगों, हम सभी को कष्ट हो रहा है, चिंता हो रही है। लेकिन ये सब क्यों हो रहा है? एक कारण है शासक बुर्जुआ वर्ग, सत्ताधारी पार्टियां षड्यंत्र करके देश के महान चरित्रों की याद को मिटा रही हैं और गंदे रास्ते पर संचालित छात्र-युवा शक्ति की नैतिक रीढ़ को तोड़ रही हैं। दूसरा कारण, दास प्रथा के युग में जब अत्याचार के खिलाफ धर्मप्रचारक दासप्रभुओं के आक्रमण के सामने कलेजे का रक्त बहाकर, प्राण देकर, भूखे रहकर धार्मिक शासन कायम करने के लिए, समाज कल्याण के लिए, मनुष्य के विवेक को जगाने के लिए धार्मिक वचनों का प्रचार करते थे तब धार्मिक मूल्यबोध ने इन्सानियत पैदा की थी। बाद के समय में इतिहास के गतिपथ में ईश्वर का प्रतिनिधि कह कर परिचित राजा धर्म को हथियार बना कर अत्याचार करने लगे, तब धर्म प्रगतिशील चरित्र खोकर इन्सानियत की राह में रुकावट बनकर खड़ा हो गया था, धर्म के नाम पर विभिन्न अधर्म व दुराचार करने लगे, तब राजतंत्र-विरोधी प्रजातंत्र स्थापित करने के संघर्ष में धार्मिक मूल्यबोधों की जगह मानवतावादी जनतांत्रिक मूल्यबोधों ने प्रगतिशील भूमिका निभाते हुए नए सिरे से इन्सानियत को जगाया था। हमारे देश के आजादी आंदोलन में भी समझौतावादी और क्रांतिकारी धारा, दोनों के प्रभाव से ही तत्कालीन राष्ट्रवाद-मानवतावाद के आह्वान ने नई नैतिकता का पता दिया था। लेकिन जो राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन को मदद दे रहे थे आज वही शासक की भूमिका में आकर 'राष्ट्रीय स्वार्थ' की दुहाई देकर शोषण और लूट चला रहे हैं। इसीलिए आज देखा जा रहा है कि जितने धार्मिक क्रियाकलाप बढ़ रहे हैं, राष्ट्रीयता के नारे उठाए जा रहे हैं उतना ही नैतिक अध:पतन बढ़ रहा है। क्योंकि इतिहास के अनिवार्य नियम के मुताबिक धार्मिक नैतिकता और बुर्जुआ राष्ट्रवाद शोषण-जुल्म के खिलाफ लड़ तो रहा ही नहीं बल्कि सहायक की भूमिका निभा रहा है, प्रगतिशील चरित्र खो बैठा है। एक युग के मूल्यबोध जब नए युग की जरूरत के परिप्रेक्ष्य में मूल्यहीन होकर प्रगति के विरोधी होकर अन्याय-अत्याचार के पक्ष में खड़े हो जाते हैं तब दिखाई देती है नए मूल्यबोधों की जरूरत। इसी वजह से ही समाज में यह मूल्यबोधों का संकट है। इसीलिए वर्तमान युग की जरूरत है नए मूल्यबोध और वे हैं पूंजीवाद-विरोधी सर्वहारा क्रांतिकारी मूल्यबोध। यह बात आज मैं दृढ़तापूर्वक कहना चाहता हूँ कि ये सर्वहारा क्रांतिकारी मूल्यबोध हमारे सामने महान मार्क्सवादी चिंतनकार कॉमरेड शिवदास घोष ने प्रस्तुत किए हैं। हालांकि हमारी पार्टी की पर्याप्त ताकत न रहने की वजह से सभी जगह इन मूल्यबोधों का प्रचार हम नहीं कर सके हैं। लेकिन हमारी पार्टी के कार्यकर्ता जो इन सब मनीषियों-शहीदों की याद में कार्यक्रम करते हैं, हमारे कार्यकर्ता बातचीत में, चाल-चलन, बोलचाल, आचरण-व्यहार में जिस सज्जनता, शालीनता, इन्सानियत को वहन करते हैं वह एकमात्र कॉमरेड शिवदास घोष द्वारा दिए गए सर्वहारा क्रांतिकारी मूल्यबोधों की अमूल्य शिक्षा के प्रभाव की वजह से है। हालांकि हमारे बीच इस मामले में स्तर का तफर्का हैं जो जितना कर पा रहा है वहन करने का संघर्ष कर रहा है।

क्या इसी आजादी के लिए लड़े थे स्वतंत्रता सेनानी और शहीद

कॉमरेड शिवदास घोष ने मार्क्सवाद के आधार पर दिखाया था कि हमारा समाज वर्गों में बंटा हुआ है। पूंजीपति और मजदूर, गरीब और अमीर इस प्रकार बंटा हुआ है। देश आजाद होने के बाद आज एक राष्ट्र, एक राष्ट्रीय स्वार्थ कहने को और कुछ नहीं है। या तो पूंजीपति का स्वार्थ नहीं तो मजदूरों का स्वार्थ, या तो शोषकों का स्वार्थ नहीं तो शोषितों का स्वार्थ-इस तरह से ही देखना होगा। पार्टी को भी इसी प्रकार समझना होगा। चाहे कोई भी पार्टी हो या तो पूंजीपतियों की है नहीं तो मजदूर वर्ग की है। इसी तरह वर्ग दृष्टिकोण के आधार पर पार्टी का विचार करना होगा। पूंजीपति जो हर दिन, हर घंटे, हर मिनट, हर सैंकेड में लाखों करोड़ रुपया लूट रहे हैं, पूरे देश को भिखारी बना रहे हैं वे चाहते हैं कि तर्क मर जाए, चिंतन मर जाए, बुद्धि-विवेक मर जाए, आदमी सवाल नहीं करे, तर्क नहीं करे, आदमी जान नहीं पाए कि उसका न्यायसंगत अधिकार क्या है, वह समझ ही नहीं पाए। वे चाहते हैं आदमी को लोभी-लालची बना दो, स्वार्थी बना दो, जंगली जानवर बना दो, अमानवीय बना दो और पूंजीपतियों की ताबेदार सत्ताधारी पार्टियां, वह चाहे बीजेपी हो या कांग्रेस हो, वे यह काम कर रही हैं। जितने दिन सीपीआई(एम) सत्ता में थी उसने भी यही काम किया था। इसी वजह से हमें उनके खिलाफ लड़ना पड़ा था। आज तृणमूल भी वही काम कर रही हैं। तृणमूल नेत्री कन्याश्री वितरित कर रही है चुनाव को ध्यान में रखकर। लेकिन हर रोज कितनी बच्चियां बिना इलाज के मर रहीं है, क्या उनकी खबर रखती हैं? कितनी महिलाएं बंगाल से तस्करी करके बाहर बेची जा रही हैं इसकी कुछ खबर रखती हैं? कन्याश्री, युवाश्री, क्लबों को अनुदान यह सब दान अनुदान दिया जा रहा है असल में वोटों की श्रीवृद्धि के लिए। जबकि आम आदमी की हालत क्या है? नरेन्द्र मोदी ने चुनावों से पहले कहा था, कालाधन वापस लाकर पूरे देश के हर परिवार में 100 दिन के अंदर 15 लाख रुपया उनके बैंक खाते में डाल देंगे। लोगों के बैंक खातों में कितना रुपया डाला है! काले धन के कारोबारी कौन हैं? क्या जूट मिल के मजदूर, चाय बागान के मजदूर काला धन जमा करते हैं, क्या बटाईदार किसान काला धन जमा रखते है? कौन कालाधन जमा करता है? पूंजीपति करते हैं, व्यापारी करते हैं टैक्स चोरी करने के लिए। और वही चुनावों में लाखों करोड़ रुपया बहाते हैं इन सब पार्टियों को जिताने के लिए। इसलिए सरकार में बैठकर नेता काले धन का बाल भी बांका नहीं कर सकते हैं।

यह पूंजीवाद ही जनता का दुश्मन है। हमारे देश का विकास क्या हो रहा है एक तरफ राष्ट्रपति ही स्वीकार कर रहे हैं 121 करोड़ लोगों में से देश में 66 करोड़ लोग बेरोजगार हैं। इसके अलावा सरकारी आयोग के हिसाब से 75% लोग गरीबी रेखा के नीचे हैं। 77% लोग हर रोज 20 रुपये से ज्यादा खर्च करने की क्षमता नहीं रखते हैं। यही हो रहा है देश का विकास! हालांकि अंबानी, टाटा, बिड़ला, गोयंका, जिंदल, अदानी इन सब की सम्पत्ति का परिमाण देखिये –लाखों-लाख करोड़ रुपये है। बढ़ता है तो बढ़ ही रहा है। केन्द्रीय सरकार चल रही कर्ज लेकर। लगभग 69 लाख करोड़ रुपया केन्द्रीय सरकार का कर्ज है। 5 लाख 55 हजार करोड़ रुपया इसका बजट घाटा है। इसी केन्द्रीय सरकार ने 4 लाख करोड़ रुपये का टैक्स मुनाफाखोर पूंजीपतियों का माफ कर दिया। इन्हीं पूंजीपतियों ने बैंक से 8 लाख करोड़ रुपया हड़प लिया है। बैंक से कर्ज लेकर वापस नहीं दे रहे हैं। सरकार जनता का पैसा लेकर बैंकों को वह रुपया दे रही है। यह सरकार किसकी है? किसके लिए 'अच्छे दिन' लाई है? राष्ट्रपति भवन में, राजभवनों में 15 अगस्त धूमधाम से मनाया जाएगा। पांचतारा होटलों में, उद्योगपति, व्यापारी, मंत्रीगण ये सब नेतागण सरकारी भोजसभा करके स्वाधीनता का उत्सव मनाएंगे, इसके साथ ही एक बहुत ही मर्मस्पर्शी नजारा दृष्टिगोचर होगा असंख्य भूखे बच्चे भोजसभा से बची झूठन को कूड़ेदान से बीन रहे होंगे। इसी आजादी के लिए ही क्या स्वतंत्रता सैनानी लड़े थे, शहीद हुए थे? लाखों-लाख गरीब लोग कर्ज के जाल में फंस कर भूखे मरते हुए आत्महत्या को मजबूर हो रहे हैं और एक बीजेपी मंत्री कह रहे हैं कि 'आत्महत्या करना एक फैशन बन गया है'। कितना निष्ठुर होने से ही ये नेता इस तरह की बात कह पाते हैं।

परिवर्तन के नाम पर तृणमूल का शासन है सीपीआई(एम) की कार्बन कॉपी

कुछ दिन पहले तृणमूल नेत्री ने कहा था, दो चार जनों की वजह से उसकी पार्टी की बदनामी हो रही है। सिर्फ दो चार जने सिंडिकेट करते हैं, हफ्तावसूली करते हैं। वे खुद अपने मन में भी क्या इस बात पर विश्वास करती हैं? आज पूरी तृणमूल पार्टी ही तो खड़ी है हफ्ता वसूलने वालों पर, सिंडिकेटों के ऊपर कुछ अपवाद अवश्य ही हैं। निश्चित ही इस मामले में इनकी जितनी जिम्मेदारी है इससे कहीं अधिक जिम्मेदारी सीपीआई(एम) की है। इस राज्य में सिंडिकेटों का राज, हफ्ता वसूलने वालों का राज, छीना-झपटी करने वालों का राज तो सीपीआई(एम) की ही देन है। उसी रास्ते पर तृणमूल चल रही है। क्या आजकल इनके बगैर चुनावों में काम चलता है? चुनाव का मायने ही है करोड़ों रुपये का खेल। इन्होंने लोगों की इन्सानियत को मार दिया है। लोगों के लोभ-लालच को जगा दिया है, मर्यादा नष्ट कर दी है।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

जनता के सामने अपनी गलती मानें सीपीआई(एम) नेतागण

(पृष्ठ 5 का शेष)

लोग सोचते हैं कि वैसे तो कुछ मिल नहीं रहा है, इसमें दो-चार-दस हजार रुपये तो मिल रहे हैं। नौजवान भी सोचते हैं कि शराब-मांस खाने को तो पैसा मिल रहा है। जो पार्टी ज्यादा पैसा देगी उसी का झण्डा उठा लेंगे। यही है आजकल की राजनीति। आजादी आन्दोलन के समय राजनीति थी कुर्बानी देने की राजनीति—जेल जाओ, नौकरी मत करो, परिवार को मत देखो, फांसी के तख्ते पर चढ़कर अपनी जान न्योछावर कर दो। सुभाषचन्द्र बोस ने कहा था कि तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा। यह थी उन दिनों की राजनीति। और अब इन सब राजनैतिक पार्टियों के नेता, जिनकी बस यही नीति है कि पूंजीपतियों की सेवा करो, एमएलए-एमपी बनो, मंत्री बनो, करोड़ों करोड़ रुपये कमाओ। इसके लिए पूंजीपतियों से करोड़ों रुपये लेकर चुनाव में उतरो, वोटरों को खरीदो, नौजवानों को खरीदो। ये नौजवान इसलिए मिल जाएंगे कि इनमें जमीर-इज्जतबोध-सोचविचार सभी कुछ नष्ट कर सका हूँ। इसलिए नौजवानों को मैं खरीद सकता हूँ। इस तरह अब आ गई है लेने-पाने की राजनीति। एक तरफ जहाँ पूंजीपति-व्यापारी-जमाखोर-कालाबाजारिये करोड़ों करोड़ रुपये लूट रहे हैं, वहीं पूंजीपतियों की ताबेदार इन वोट बटोरू पार्टियों के नेता एमएलए-एमपी, मंत्री बनकर करोड़ों रुपये कमा रहे हैं। हम जानते हैं कि 80 फीसद सांसद करोड़पति हैं। ये ही करोड़ों करोड़ कंगाल, बदहाल, असहाय, भूखे-नंगे लोगों के नुमाइन्दे हैं। मंत्री-विधायक इसी तरह कमा खा रहे हैं। इनकी राजनीति है बगैर पूंजीनिवेश के करोड़ों करोड़ रुपये हड़प लेना। इस सूरतेहाल में भी हर महीने 1 लाख 40 हजार रुपये वेतन-भत्ते से विधायकों का गुजारा नहीं होता है, इसे दोगुना किया जाये। यही हैं आज के देशसेवक, जनता के चौकीदार!

पिछली सदी के पचास-साठ के दशक में वामपंथी राजनीति में भी न्योछावर कर देने की, कुर्बानी करने की राजनीति का प्रभाव था। तब सीपीआई(एम) नहीं थी, अविभाजित सीपीआई थी। हालांकि वह कभी सही मार्क्सवादी पार्टी नहीं थी। लेकिन उनमें जुझारू वामपंथ था। उसके नेताओं में भी जेल जाने, मार खाने, कार्यकर्ताओं में भी जेल जाने, मार खाने का जज्बा था। मार्क्सवादी नहीं होते हुए भी साठ के दशक तक ये सब उनमें था। 1964 में सीपीआई(एम) में भी यह मानसिकता थी। लेकिन सीपीआई(एम) के 34 साल के शासन ने सबसे बड़ा सर्वनाश किया था—एक तरफ वामपंथ को बदनाम किया, वामपंथ की मर्यादा खत्म कर दी, दूसरी तरफ पूंजीपतियों ने जो चाहा वही किया, जन आन्दोलन को ध्वस्त कर दिया। जूट मजदूरों पर गोली चलाई। गोदी मजदूरों पर गोली चलाई, नदिया के किसानों पर गोली चलाई, नंदीग्राम में गोली चलाई, महिलाओं से बलात्कार किये – ये सब घटनाएं सर्वविदित हैं। इन सब के द्वारा पूंजीपतियों को खुश करके वे बार-बार सत्ता में आये।

सीपीआई(एम) नेताओं ने बना दिया है स्वेच्छाचारी कांग्रेस को 'लोकतांत्रिक'

पूंजीवाद जो चाह रहा है— इन्सानियत को, नीति-नैतिकता को ध्वस्त कर डालो, सीपीआई(एम) ने वही किया है। एक तो यह कि हमारी पार्टी में आओ, आने से लाइसेन्स मिलेगा, परमिट मिलेगा, ठेकेदारी कर पाओगे, नौकरी मिलेगी, प्रमोशन मिलेगा, योग्यता नहीं होने पर भी अध्यापक लग जाओगे, यूनिवर्सिटी में प्रोफेसर बन जाओगे, पुलिस अफसरों का प्रमोशन होगा, अच्छी जगह तबादला हो जाएगा—यही सब सिखाया है। छात्र-नौजवानों को भी यही सिखाया है कि हमारी पार्टी का बनकर काम करो, पैसा मिलेगा, नौकरी मिलेगी, ठेकेदार के नीचे काम मिल जायेगा। यह पाने-अपनी जेब भरने की राजनीति इस राज्य में सीपीआई(एम) लाई है। इस पाने-अपनी जेब भरने की राजनीति पर ही अब तृणमूल चल रही है। परिवर्तन के नाम पर तृणमूल का शासन है सीपीआई(एम) के शासन की कार्बन कापी। तृणमूल भी अब वही कर रही है जो सीपीआई(एम) किया करती थी। सीपीआई(एम) व्यवस्थित ढंग से किया करती थी, बड़ी बारीकी से किया करती थी, बड़े संगठित रूप में किया करती थी, उतने संगठित और व्यवस्थित ढंग से करने की बुद्धि तृणमूल में नहीं है, कई बार पकड़ी जाती है—बस इतनी सी बात है। इसलिए तृणमूल नेत्री जब कहती है कि सिण्डीकेट को चलने नहीं देगी, तो जो सिण्डीकेट चलाते हैं वे हँसते हैं। कहते हैं कि नेताओं को यह सब बोलना पड़ता है। हम अपना काम करेंगे, नेता अपना। हाल ही में अखबार में खबर पढ़ी कि मुख्यमंत्री ने पुलिस अधिकारियों से कहा है, 'मैं नाजायज कुछ करूँ तो मुझे बख्शना मत। जरूरत पड़े तो मुझे भी सजा दे देना।' यह सब कहने पर, पुलिस अधिकारी क्या करेंगे, मुँह पर कुछ कहने की बजाय, हँसते-हँसते बाहर निकल जायेंगे। इसके बाद तो निश्चय ही इस राज्य में देखेंगे कि चोरी-डकेती, लूट, हफ्तावसूली, बलात्कार नाम की कोई चीज नहीं रहेगी। क्योंकि मुख्यमंत्री ने कहा है कि वह भी कुछ नाजायज करे तो उसे भी सजा दी जाये। वास्तव में मुख्यमंत्री से लेकर ये सभी लोग पाखण्ड, ढोंग, ढकोसलाबाजी करते आ रहे हैं। साधारण अपराधी पहचाना जा सकता है लेकिन इनको पहचानना बड़ा मुश्किल है। एक समय कहा जाता था—राजनीति का अपराधीकरण हो रहा है यानी राजनीतिक क्षेत्र में अपराधी आ रहे हैं। हम कहते हैं कि अपराधियों के सरगना हैं राजनैतिक नेता। अपराधियों के सरगना ये गद्दी के भूखे नेता नौजवान तबके को अपराधी बना रहे हैं। ये सबसे बड़े अपराधी हैं। लेकिन ये देशसेवक का चोला पहने घूम रहे हैं। लोगों को ठग रहे हैं।

सीपीआई(एम) के नेताओं से भी कहता हूँ, आपने हमारी बात सुनी नहीं, आपने 34 साल तक राज्य में शासन किया है, 34 साल यदि यथार्थ वामपंथ के रास्ते पर चले होते तो महान लेनिन की सीख के मुताबिक वर्ग संघर्ष और भी तेज करना, लोगों में वामपंथी चेतना पैदा करना, इन्सानियत को जगाना —यह यदि किया होता, यदि गुटबाजी न की होती, पुलिस को जिम्मेदारी देकर असामाजिक तत्वों पर काबू पाया होता, यदि जोर-जबरदस्ती और आतंक नहीं बरपाया होता और भ्रष्टाचार को प्रश्रय नहीं दिया होता तो क्या आज आपकी पार्टी की यह दुर्दशा हुई होती? आपकी पार्टी के तो तीन-चार लाख मेम्बर थे। छात्र और नौजवानों का संगठन, ट्रेड यूनियन आदि को मिलाकर कई करोड़ आपके आदमी थे, लेकिन जिस पल सरकार से चले गये, कपूर की तरह सब उड़ गया। कहाँ चला गया? क्यों? क्योंकि सब कुछ सरकार पर आधारित था। आपकी सरकार तो शहद का बर्तन था। मार्क्सवाद तो दूर की बात, वामपंथ पर भी अमल नहीं किया। शहद के लालच में पड़कर सब भीड़ लगाये हुए थे। एक समय आपकी पार्टी भी लड़ाई लड़ती थी, मैं कहता हूँ 1964-65, '67, '69, '72 में भी सीपीआई(एम) के कार्यकर्ताओं में जो हिम्मत-हौंसला था, आज वह कहाँ चला गया? आज आप कांग्रेस के कंधों पर चढ़े हुए हैं। यह कांग्रेस भारत की एक प्रधान बुर्जुआ पार्टी है, इसने लम्बे अर्से तक पूंजीवाद को मजबूत किया है, जिस कांग्रेस ने कितना खून बहाया है, '52 से '66 तक पश्चिम बंगाल में इस कांग्रेस ने लोगों का कोई कम खून नहीं बहाया। आप वह सब भूल जा सकते हैं, लेकिन हम नहीं। 31 अगस्त को जिस शहीद वेदी पर माल्यार्पण करते हैं, वे शहीद किसकी गोली से मारे गये थे, यह क्या भूल गये हैं? उसी कांग्रेस को आपने 'लोकतांत्रिक' बना दिया है। जिस कांग्रेस ने मिसा, टाडा, नासा यूएपीए जैसे काले कानून लागू किये, जिस कांग्रेस ने इमरजेन्सी लगाई, उसी कांग्रेस को आपने 'लोकतांत्रिक' बना दिया है।

कभी धर्मनिरपेक्ष शक्ति नहीं रही कांग्रेस

कांग्रेस क्या कभी धर्मनिरपेक्ष थी? सही मायने में धर्मनिरपेक्ष थे विद्यासागर, शरत्चन्द्र, भगत सिंह। सुभाषचन्द्र बोस ने कहा था धर्म को राजनीति से दूर कर दो, राजनीति के साथ धर्म का सम्पर्क नहीं रहेगा, राजनीति चलेगी सामाजिक, आर्थिक, वैज्ञानिक नीति के द्वारा। क्या कांग्रेस ने ऐसा किया? उसी समय कांग्रेस ने कहा सर्वधर्म समन्वय। जो सेक्यूलरिज्म नहीं है। दरअसल यह था कांग्रेस में उच्च वर्णीय हिन्दुओं का बोलबाला जिसके चलते केवल आम मुसलमान ही नहीं, बल्कि दलित भी आजादी आन्दोलन में कोई खास नहीं आये। इसी वजह से देश का भी बंटवारा हुआ। कांग्रेस की साजिश से क्या कम दंगे हुए हैं? भागलपुर, राऊरकेला, गुजरात के अहमदाबाद, आसाम के नेली में हुए दंगे और सबसे अंत में दिल्ली में सिखों का हत्याकाण्ड कांग्रेसी नेताओं द्वारा सुनियोजित था। उसी कांग्रेस को सीपीआई(एम) बता रही है 'साम्प्रदायिकता-विरोधी' और 'सेक्यूलर'।

आप जानते हैं कि सिंगूर-नंदीग्राम आन्दोलन के आधार पर हमारे साथ तृणमूल का गठजोड़ कायम हुआ था। उस आन्दोलन के पक्ष में कौन हैं और विपक्ष में कौन—इसी सवाल को लेकर 2009 के लोकसभा चुनाव और 2011 के विधानसभा चुनाव में हम इकट्ठे लड़े, लेकिन कभी भी तृणमूल पर 'लोकतांत्रिक', सेक्यूलर' होने का लेबल हमने नहीं लगाया। इस बार भी उनके किसी-किसी नेता ने इशारा दिया था कि उनके साथ जाने से शायद जयनगर, कुलतली में जीत सकेंगे, यही इशारा सीपीआई(एम) ने भी दिया था कि जयनगर की सीट हमारे लिए छोड़ देंगे। हमने सीटों के लालच में यह नीतिहीन गठबंधन नहीं किया। हम चुनावों में हारे हैं धनबल, मीडिया बल, बाहूबल से। लेकिन उससे क्या हम कमजोर हो गये हैं? हमारी ताकत बढ़ रही है क्रान्तिकारी विचारधारा के बल पर। आज की यह विशाल जनसभा ही इस बात का साफ सबूत है कि हमारी ताकत बढ़ रही है। मुसलाधार बारिश सर पर हो रही है फिर भी हजारों हजार की तादाद में आप लोग सभा में बैठे सुन रहे हैं, बच्चों को गोद में लिए हुए माताएं सुन रही हैं। दूसरी किसी पार्टी लाखों रुपये खर्च करके भी क्या इस तरह की सभा कर सकती है?

गद्दीसर्वस्व राजनीति के जाल में फंस चुकी है सीपीआई(एम)

सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी होने के नाते जब तक सीपीआई(एम) बुर्जुआ राज्य-व्यवस्था में सरकार में जाने का मौका नहीं था, तब तक इसका जुझारू वामपंथी चरित्र था, लेकिन सरकार में जाने के बाद लगातार वोट और गद्दीसर्वस्व राजनीति के जाल में फंस कर पहले वाले जुझारू वामपंथी चरित्र में गिरावट आने लगी है और पिछले 34 साल के शासन के दौरान यह एक परम मुकाम पर आ पहुंची है। काफी कुछ ब्रिटेन की लेबर पार्टी और यूरोप की समाजवादी पार्टियों का जो हाल हुआ है सीपीआई(एम) की भी वही दशा है।

हमारा मानना है कि सीपीआई(एम) नेतृत्व यदि लेनिनीय शिक्षा के मुताबिक खुलेआम निष्कपट ढंग से अपनी गलतियों को मान लेती और सुधार के सही रास्ते पर चलती, जुझारू वामपंथी रास्ता अख्तियार करती तो जनता के बीच इस बार चुनावों में उनकी स्वीकार्यता काफी बढ़ जाती। जो पिछले 5 साल के तृणमूल के शासन से असंतुष्ट थे व लोग भी नहीं चाहते थे कि सीपीआई(एम) इस बार सत्ता में आये। 34 साल के सीपीआई(एम) शासन के आतंक को वे लोग अभी तक भूले नहीं हैं। इसने तृणमूल की मदद की। इसके बावजूद आगामी 5-10 साल बाद स्वाभाविक है कि तृणमूल जनप्रियता खो देगी, तब हो सकता है कि बुर्जुआ वर्ग विकल्प के रूप में सीपीआई(एम)-कांग्रेस गठबंधन या सीपीआई(एम) को सत्ता में बैठा दे। लेकिन उससे सीपीआई(एम) में जो भी बचा-खुचा वामपंथ आज है, वह भी क्षतिग्रस्त हो जाएगा।

जनता के सामने निष्कपट ढंग से अपनी गलती मान लेना ही है लेनिनीय शिक्षा

हम अब भी सीपीआई(एम) के नेता-कार्यकर्ताओं से सोच को देखने की कहते हैं कि आप अपनी गलती मान लीजिए। कह दीजिए हमने 34 साल जो किया वह वामपंथ के रास्ते पर नहीं हुआ, हमने गलत किया। लोगों से आपको माफी मांगनी चाहिए। महान लेनिन ने कहा था कि कम्यूनिस्ट भूल हो जाने पर सरेआम अपनी भूल स्वीकार करते हैं। केवल इतना ही नहीं कि वे अपनी गलती मान लेते हैं, बल्कि यह भी विचार करते हैं कि गलती क्यों हुई। वे जनता को बताते हैं कि किस कारण से गलती हुई और किस तरह गलती सुधारी जाएगी। लेनिन की इस सीख की बात सीपीआई(एम) के नेताओं से बताई थी। आज भी सीपीआई(एम) में वामपंथी मनोभाव के काफी कुछ नेता-कार्यकर्ता हैं। उनसे हमारी अपील है कि नेता आपको गलत रास्ते पर ले जा रहे हैं, गद्दी के लोभ में एक बुर्जुआ पार्टी को मजबूत कर रहे हैं, नतीजतन आपकी पार्टी कमजोर हो रही है। आप इसके खिलाफ उठ खड़े हों। आप फिर जुझारू वामपंथ के रास्ते पर लौट आयें। सीआई(एम) की पार्टी कांग्रेस में खड़े होकर यह बात मैंने पार्टी की तरफ से कही थी। आप आइये, हम मिलकर खड़े हों, लड़ाई लड़ें।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

कॉमरेड प्रभास घोष का भाषण

(पृष्ठ 6 का शेष)

बीजेपी-आरएसएस ने किया था आजादी आन्दोलन का विरोध

कॉमरेडों और दोस्तो, इस बारिश में काफी तकलीफ उठाकर आप सुन रहे हैं, मैं ज्यादा समय नहीं लूंगा। बोलने को तो और भी बहुत कुछ था। केवल इतना ही कहूंगा कि देश में अब धर्मीय कट्टरता-साम्प्रदायिकता खतरे के रूप में दिखाई दी है। आरएसएस-बीजेपी हिन्दू धर्मीय कट्टरता और साम्प्रदायिकता को भड़का रहे हैं। इसकी प्रतिक्रिया में मुस्लिमों में भी यही हो रहा है। यह एक तरफ तो पूंजीवाद की रक्षा करने के लिए धर्मीय रूढ़िवाद को बढ़ावा देने के लिए किया जा रहा है ताकि लोगों को यह समझाया जा सके कि 'तुम बेरोजगार क्यों हो, अनाहार-बेइलाज क्यों मर रहे हो, क्यों कि यह सब तुम्हारे पूर्वजन्मों के पापों का कर्मफल है, अमीर-गरीब भगवान के बनाये हुए हैं, सब खुदा की मर्जी है, नसीब का खेल है।' यह सब समझा दिया जाये तो आदमी फिर प्रतिवाद नहीं करेगा, संघर्ष नहीं करेगा। इस तरह युक्तिवादी मन, लोकतांत्रिक मानसिकता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण खत्म किया जा रहा है। दूसरी तरफ हिन्दु-मुस्लिमों, सवर्णों और दलितों के बीच दंगे-फसाद, तरह-तरह की इलाकापरस्ती की आग लगवाकर जनता की एकता, जन आन्दोलन की एकता को तोड़ा जा रहा है, इसके अलावा, पूंजीवाद की सेवक पार्टियों के स्वार्थ में हिन्दू वोट बैंक, मुस्लिम वोट बैंक, उच्च वर्ण-जाति का वोट बैंक और दलित वोट बैंक आदि भी बनाये जा रहे हैं। आजादी आन्दोलन की बहुत सारी सीमाबद्धताएं होते हुए भी उसके द्वारा जितनी हद तक जनता की एकता निर्मित हुई थी, ये उसे भी टुकड़े-टुकड़े कर देने पर तुले हुए हैं।

बीजेपी नेता 'देशप्रेम' का नारा दे रहे हैं। उनसे पूछिये कि बीजेपी के जनक आरएसएस नेता आजादी आन्दोलन में क्या कर रहे थे? जब इस देश में सैकड़ों लड़के-लड़कियां जेल जा रहे थे, पुलिस की लाठी-गोली खा रहे थे, जान दे रहे थे, तब आरएसएस आजादी आन्दोलन में नहीं था। जानते हो क्यों? उनके गुरु गोलवलकर ने जो कहा था, उनका वह वक्तव्य किताब से पढ़कर सुनाता हूँ-'भौगोलिक राष्ट्रवाद और साझे खतरे के सिद्धांत के आधार पर हमारा जो राष्ट्र का सिद्धांत निर्मित हुआ है उसने हमारे असली हिन्दू राष्ट्रवाद के सकारात्मक और प्रेरक तत्व से हमें वंचित कर दिया है और हमारे बहुत से 'आजादी आन्दोलनों' को कार्यतः ब्रिटिश-विरोधी आन्दोलन बना दिया है। ब्रिटिश-विरोध को देशप्रेम और राष्ट्रवाद के समतुल्य बना दिया है। इस प्रतिक्रियावादी विचार ने समग्र आजादी आन्दोलन, उसके नेतागण और आम लोगों पर विनाशकारी प्रभाव डाला है।' उन्होंने यह भी कहा था कि जो हिन्दू राष्ट्रवाद की बात नहीं कहते, 'वे या तो राष्ट्रीय हित के लिए शत्रु या विश्वासघातक हैं अथवा नरम शब्दों में कहें तो मूर्ख हैं।' आरएसएस के गुरु के इस कथनानुसार देशबंधु चित्तरंजन दास, लाला लाजपत राय, तिलक और नेताजी, भगत सिंह, खुदीराम बोस को किस विशेषण से नवाजा जाये? आप विचार करके देखिये। क्योंकि इनमें से तो कोई भी हिन्दू राष्ट्रवाद के लिए नहीं लड़ा। आज ये बीजेपी-आरएसएस नेता ही 'देशप्रेम की बाढ़' ला रहे हैं। उनकी किस्मत अच्छी है, आजकल अनेक लोगों को इन सब बातों की जानकारी नहीं है। मैंने पहले ही कहा कि वे यदि हिन्दू धर्म के वफादार सेवक हैं, तो चैतन्य, रामकृष्ण परमहंस, विवेकानंद में से कोई भी हिन्दू नहीं था। क्योंकि ये राम जन्मभूमि खोजने नहीं गये, इन्होंने बाबरी मस्जिद तोड़ने का आह्वान नहीं किया। रामकृष्ण ने खुद मस्जिद में नमाज अदा की, गिरजाघर में प्रार्थना की। कहा कि भगवान, अल्लाह, गॉड एक ही है। विवेकानंद ने सभी धर्मों का बराबर आदर करने की बात कही। उन्होंने यह भी कहा मेरी पत्नी ईसाई, बेटा बौद्ध और मैं मुसलमान हो सकता हूँ। उनकी इस तरह की बहुत सारी बाते किताब खोलकर दिखा सकता हूँ। इसलिए कह रहा हूँ कि ये धर्म के नाम पर अधर्म करते फिर रहे हैं। पश्चिम बंगाल में पहले नेताजी के प्रभाव, वामपंथी आन्दोलन के प्रभाव के फलस्वरूप श्यामाप्रसाद मुखर्जी जैसे शक्तिशाली व्यक्ति के रहने पर भी हिन्दू महासभा जगह नहीं बना पायी। आज सीपीआई(एम) के हाथों वामपंथ कमजोर और कलंकित हो जाने से बीजेपी-आरएसएस की ताकत बढ़ती जा रही है। यह चिन्ता की बात है। दूसरी तरफ बीजेपी की ताकत जितनी बढ़ती जा रही है, उसे सीपीआई(एम) और तृणमूल अपने-अपने स्वार्थ में बढ़ाचढ़ा कर दिखा रहे हैं। तृणमूल 'मुस्लिम वोट बैंक' तैयार करने और बनाये रखने के लिए बीजेपी की ताकत को बढ़ाचढ़ा कर दिखा रही है, और सीपीआई(एम) कांग्रेस के साथ गठजोड़ करना 'जायज' साबित करने के लिए दिखा रही है कि यह गठबंधन नहीं किया होता तो बीजेपी दूसरा स्थान हासिल कर लेती। इस प्रकार दोनों ही बीजेपी का प्रचार बढ़ाकर बीजेपी की ताकत बढ़ोतरी में ही मदद कर रही हैं।

धर्म की शिक्षा के खिलाफ ही काम कर रहे हैं मजहबी आतंकवादी

इस्लाम धर्म के नाम पर जो दहशतगर्दी चल रही है वह हजरत मुहम्मद की शिक्षाओं के बिल्कुल खिलाफ है। हजरत मुहम्मद ने अपने पूर्ववर्ती तीन धर्म प्रचारकों इब्राहिम, ईसा, मूसा के बारे में कहा था वे अल्लाह प्रेरित पैगम्बर थे, उनका मेरी तरह ही सम्मान करोगे। हजरत मुहम्मद ने खुद आक्रान्त होने पर तीन बार युद्ध किया था, लेकिन खुद किसी पर आक्रमण नहीं किया। किसी बंदी की हत्या नहीं की और हत्या करने भी नहीं दी। यहां तक कि मक्का में जब प्रवेश किया, तो उनके प्रधान शत्रु, जिसने उन पर बार-बार हमले किये थे, उस अबू सुफियान को बंदी बना कर जब लाया गया, तो दूसरों ने उसकी हत्या करनी चाही, लेकिन हजरत मुहम्मद ने उनको अपने धर्म में दीक्षित कर लिया। यह है इस्लाम धर्म। इस्लाम कहने का अर्थ है शान्ति। हिन्दू धर्म प्रचारकों की बात मैं पहले ही बता चुका हूँ। इसलिए जो हिन्दू धर्म के नाम पर मुस्लिमों और दलितों पर जुल्म ढाते हैं, वे हिन्दू धर्म-विरोधी हैं। जो इस्लाम धर्म के नाम पर जुल्म करते हैं, वे भी मुस्लिम धर्म-विरोधी हैं।

(शेष पृष्ठ 8 पर)

कॉमरेड योगेश धाकड़ लाल सलाम

एसयूसीआई (सी) की गुना (मध्य प्रदेश) जिला सांगठनिक कमेटी के सदस्य, ऑल इण्डिया डीएसओ के म.प्र. राज्य उपाध्यक्ष और गुना जिला अध्यक्ष और ब्रेकथ्रू साइंस सोसाइटी के राज्य संयोजक कॉमरेड योगेश धाकड़ ने 17 अगस्त को अन्तिम सांस ली। वे 34 साल के थे। वे लगभग डेढ़ साल से केन्सर से पीड़ित थे जिसने उनकी जान ले ली।

कॉमरेड योगेश, 2001 में जब कॉलेज में पढ़ते थे, ऑल इण्डिया डीएसओ के माध्यम से महान मार्क्सवादी नेता कॉमरेड शिवदास घोष के विचारों के सम्पर्क में आये। तभी से उन्होंने कॉमरेड शिवदास घोष के विचारों के आधार पर योग्य कम्युनिस्ट बनने के लिए खुद को झोंक दिया। उन्होंने शहर की प्रमुख जगह से, लड़कों के सरकारी हायर सेकेण्डरी स्कूल को हटा कर दूसरी जगह ले जाने ताकि वहां शोपिंग माल खुल सके, के जिला प्रशासन के प्रयास के खिलाफ किये गये विशाल सफल आन्दोलन सहित शहर और जिला में कई विजयी छात्र और जन आन्दोलन चलाये। उन्होंने पार्टी के नेतृत्व में हुए जन आन्दोलनों में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जैसे कि एलएलबी कॉलेज बचाओ आन्दोलन, फैशन शो के खिलाफ आन्दोलन, फीस बढ़ोतरी के खिलाफ आन्दोलन, किसानों की ज्वलंत समस्याओं को लेकर हुआ जन आन्दोलन जिसकी परिणति 2012 में गुना जिले की आरोन तहसील में क्षेत्रीय किसान सम्मेलन के रूप में हुई। योगेश के नेतृत्व में ब्रेकथ्रू साइंस सोसाइटी ने राज्य के बहुत सारे स्कूल-कॉलेजों में अंधविश्वास के खिलाफ कई कार्यक्रम किए।

पिछले डेढ़ साल से हालांकि वे केन्सर के भीषण हमले से आक्रांत थे, लेकिन वे अपनी जिम्मेदारियां निभाने में मानसिक तौर पर पूरे सजग थे। यहां तक कि अपने जीवन के अन्तिम दिनों में, जब उनकी तबीयत बिगड़ती जा रही थी, जैसे ही उन्हें पता चला कि गुना पीजी कॉलेज के डीएसओ के कॉलेज इकाई के सचिव का घर वालों से जबरदस्त द्वंद्व हो रहा है और उन्हें कठिन संघर्ष करना पड़ रहा है, तो उन्होंने तुरंत उस महिला को बुलाया। जैसे ही वह उनसे मिली, उन्होंने अपनी हालत की परवाह न करते हुए, वे जिस आक्सीजन मास्क को लगाये हुए थे, उसे उतार कर उसे विश्वास दिलाने के लिए उससे बात की। जब वे 5 अगस्त को राज्य स्तरीय स्मृति सभा में शामिल होने में असमर्थ थे, तो उदास और परेशान थे। शरीर साथ नहीं दे रहा था फिर भी अपनी सांगठनिक जिम्मेदारी निभाने के लिए सरोकार उनमें अंत तक देखा गया। ये उनके जीवन की अन्तिम सांस तक कॉमरेड शिवदास घोष चिन्तनधारा को आत्मसात करने के उनके जीजान से किये संघर्ष के दृष्टांत थे।

कॉमरेड योगेश के पार्थिव शरीर को उनके गांव ले जाया गया। वहां उनके परिवार के सदस्यों ने पार्टी के इस सुझाव को मान लिया कि कोई भी रस्म अदायगी न की जाये। उसके बाद सैकड़ों पार्टी कार्यकर्ता, परिवार वाले और गांव वाले उनकी अन्तिम यात्रा में शामिल हुए और अपने प्रिय कॉमरेड को अलविदा कहा।

21 अगस्त को गुना में अग्रवाल धर्मशाला में स्मृति सभा की गई। सभा शुरू होने से पहले सैकड़ों छात्रों, आम लोगों, पार्टी के नेताओं और ऑल इण्डिया डीएसओ, ऑल इण्डिया डीवाईओ, ऑल इण्डिया एमएसएस, एआईयूटीयूसी आदि के नेता-कार्यकर्ताओं ने कॉमरेड योगेश के प्रति पुष्पांजलि अर्पित की। स्मृति सभा को एसयूसीआई(सी) की मध्य प्रदेश राज्य सांगठनिक कमेटी के सचिव कॉमरेड प्रताप सामल, कॉमरेड योगेश के पिता श्री प्रकाश सिंह धाकड़, सीपीआई से कॉ. नरेन्द्र भदौरिया, सीपीआई(एम) से कॉ. विष्णु शर्मा, एसयूसीआई (सी) गुना के जिला सचिव कॉ. प्रदीप आरबी, पार्टी के जिला कमेटी सदस्य कॉ. लोकेश शर्मा, गुना शहर की जानी-मानी हस्तियों श्री गंगाधर शर्मा, एडवोकेट श्री विनय जैन के अलावा ऑल इण्डिया डीएसओ के म.प्र. राज्य अध्यक्ष कॉ. मुदित भटनागर और राज्य सचिव कॉ. सचिन जैन ने भी सम्बोधित किया। वक्ताओं ने कॉमरेड योगेश के संघर्ष से सीख लेने और छात्र आन्दोलन व जन आन्दोलनों को मजबूत करने की अपील की।

8 R.N.I. No.- 43022/85
P.R.No.-DL(C)-01/1123/2015-2017
Posting at New Delhi PSO on 7-8 and 22-23 Fortnightly , Date of Publication : September 5, 2016
सर्वहारा दृष्टिकोण
7 सितम्बर, 2016

लिबिया पर अमेरिकी हवाई हमले की एआईएआईएफ ने की कड़ी निंदा

आतंकवादी संगठन आईसिस को खत्म करने के बहाने अमेरिकी साम्राज्यवाद ने लिबिया पर नये सिरे से फिर जो हवाई हमले शुरू किये हैं ऑल इण्डिया एंटी-इम्पीरियलिस्ट फोरम (एआईएआईएफ) के अध्यक्ष प्रो. के. आर. चौधरी ने 6 अगस्त को जारी एक बयान में उसकी कड़ी निंदा की है। लिबिया पर अमेरिकी हमले की यह कोई पहली घटना नहीं है। लिबिया के तेल क्षेत्रों पर कब्जा करने के मकसद से अमेरिका-नीत जंगखोर सैन्य गठबंधन नाटो ने 2011 में पहली बार लिबिया पर आक्रमण करके वहां की राज्य-व्यवस्था और उसके समस्त प्रतिष्ठानों को तबाह कर दिया था। इस आक्रमण से पहले लिबिया अफ्रीकी महाद्वीप का सबसे समृद्ध देश था। यहां विभिन्न उपराष्ट्रीयताओं के लोगों ने मिलजुलकर स्थिर और मूलतः धर्मनिरपेक्ष राज्य कायम किया हुआ था, जहां नागरिकों के लिए तरह-तरह की कल्याणकारी योजनाएं चालू थी। अमेरिकी साम्राज्यवाद के हमले ने देश को बिल्कुल अराजक स्थिति में पहुंचा दिया। वर्तमान में वहां कोई केन्द्रीय प्रशासनिक हुकूमत नहीं है। उपराष्ट्रीयताओं में लगातार चल रहे झगड़े-फसाद ने जनजीवन को घोर बदहाल कर दिया है और उन्हें यूरोपीय देशों में पलायन कर जाने को मजबूर कर दिया है। अमेरिकी साम्राज्यवाद द्वारा पैदा की गई इस अराजक स्थिति ने आईएसआईएस के लिए अपनी ताकत बटोरने की जमीन तैयार कर दी है।

याद रखें, इराक पर अमेरिकी साम्राज्यवाद के नाजायज हमलों की परिणति के तौर पर ही इस्लामिक स्टेट ऑफ इराक एण्ड सीरिया(आईएसआईएस) की उत्पत्ति हुई है। साम्राज्यवादी ताकतों ने ही इराक और उससे पहले अफगानिस्तान में धार्मिक कट्टरपंथी आतंकवादी संगठनों की मदद की है जिसके नतीजे के तौर पर तालिबान, अल कायदा और आइएसआईएस जैसे आतंकी संगठन पनपे हैं। अमेरिकी साम्राज्यवाद वर्तमान में सीरिया में उसी तरह की नाजायज गतिविधियां चला रहा है। सीरियाई शासकों को बदलने की साम्राज्यवादियों की साजिश ने वहां आईएसआईएस को बहुत बड़े इलाके पर कब्जा करने में मदद की है। वर्तमान में सीरिया युद्ध में रूस के कूद पड़ने और आइएसआईएस के कब्जे वाले क्षेत्रों पर उसके द्वारा बमबारी किये जाने से इस इस्लामी कट्टरपंथी आतंकवादी गुट ने वहां फैली घोर अराजकता का फायदा उठाकर लिबिया में शरण ले ली है। वर्तमान लिबिया के तेल क्षेत्रों पर कब्जा बनाये रखने के लक्ष्य से विभिन्न हथियारबंद दस्तों के बीच आपस में टकराव शुरू करवा कर और आईएसआईएस के तेल क्षेत्रों पर कब्जा बनाये रखने के लिए अमेरिकी साम्राज्यवाद ने उन सब तेल क्षेत्रों और सिर्त की बंदरगाह सहित महत्वपूर्ण तटवर्ती शहरों पर अपना कब्जा बनाये रखने के लिए लिबिया पर बमबारी शुरू कर दी है।

सभी शान्तिप्रिय, लोकतंत्रपसन्द लोगों से हमारी अपील है कि धार्मिक कट्टरपंथी ताकतों के खिलाफ लड़ने के साथ-साथ अमेरिका-नीत साम्राज्यवादी ताकतों के खिलाफ भी समझौताहीन लड़ाई गठित करें।

भारत-अमेरिका सैन्य संचालन आदान-प्रदान समझौते की कड़ी निंदा

भारत-अमेरिका के बीच हुए सैन्य संचालन आदान-प्रदान समझौते (लॉजिस्टिक एक्सचेंज मेमोरंडम अग्रीमेण्ट) की कड़ी निंदा करते हुए एसयूसीआई(सी) के महासचिव कॉमरेड प्रभास घोष ने 1 सितम्बर को दिये बयान में कहा :

भारत और अमेरिका की सरकारों द्वारा 29 अगस्त 2016 को तथाकथित सैन्य संचालन आदान-प्रदान समझौते (एलईएमओए) पर हस्ताक्षर किये जाने की हम कड़ी निंदा करते हैं। अपने घृणित षड्यंत्र को छद्म आवरण देने के लिए दिखावटी तौर पर चाहे जो भी दलीलें दी जा रही हों, पर यह शीशे की तरह साफ है कि बीजेपी-नीत सरकार जो भारतीय एकाधिकारी पूंजीपतियों के आदेशानुसार ऐसा कर रही है। यह अमेरिकी साम्राज्यवादियों के दबाव के आगे झुक रही है और उनकी घोर नाजायज मांगें स्वीकार कर रही है। इनका मकसद है अपने प्रभाव क्षेत्र को विस्तारित करना और दुनिया भर में अपना दबदबा कायम करना। इस समझौते का एक और गंभीर पहलू अमेरिकी साम्राज्यवादियों की मदद से दक्षिण एशिया और दक्षिण-पूर्व एशिया में महाशक्ति के रूप में उभरने की भारतीय एकाधिकारी पूंजीपतियों और उनकी ताबेदार सरकार की आतुरता में निहित है। जाहिर है कि इस चाहत को पूरी करने के लिए वे बगैर किसी नैतिक संकोच के अमेरिकी साम्राज्यवादियों की तरफ झुकते जा रहे हैं और उनके सह-अपराधी बनते जा रहे हैं। यह सरासर गलत है और हमारे देशवासियों की ओर से इसका प्रतिरोध किया जाना जरूरी है ताकि हम अपनी साम्राज्यवाद-विरोधी शानदार परम्परा को कायम रख सकें और हमारी आजादी-स्वाधीनता पर हो रहे हमले को नाकाम कर सकें।

कॉमरेड प्रभास घोष का भाषण

(पृष्ठ 7 का शेष)

आज जो विश्वव्यापी धर्मीय कट्टरता, धर्मीय आतंकवाद, नैतिकता के संकट ने इतना भयंकर रूप ले लिया है उसका कारण क्या है? इसका पहला कारण है महान मार्क्सवाद-लेनिनवाद को हथियार बनाकर महान लेनिन के नेतृत्व में पूंजीवाद को उखाड़ फेंककर रूस में जो समाजवादी व्यवस्था कायम हुई थी और जिस व्यवस्था को पश्चिमी दुनिया में मानवतावाद के शेष प्रतिनिधि रोमां रोलां, बर्नार्ड शा, आइन्स्टीन, हमारे देश के रवीन्द्रनाथ, शरत्चन्द्र, नेताजी, भगत सिंह, प्रेमचन्द, सुब्रह्मण्यम भारती और नजरूल आदि ने अंधकार से ढकी पूंजीवादी दुनिया में नई सभ्यता के सूर्योदय के तौर पर अभिनन्दन किया था, उसी सोवियत समाजवाद के कर्णधार महान स्तालिन के नेतृत्व में ही दूसरे विश्वयुद्ध में फासीवाद पराजित हुआ था और पूर्वी यूरोप, चीन, वियतनाम में समाजवाद ने विस्तारलाभ किया था, देश-देश में शक्तिशाली क्रान्तिकारी मजदूर आन्दोलन और उपनिवेश-अर्धउपनिवेशों में जोरदार साम्राज्यवाद-विरोधी आन्दोलन उठ खड़े हुए थे। इन सबके आधार पर ही नैतिकता से दुनिया के लोग लैस हुए थे। बड़े दुःख की बात है कि वह समाजवादी व्यवस्था बाहर के साम्राज्यवादं और अन्दर की पूंजीवादी साजिश से ढह गई। इसके फलस्वरूप दोबारा विश्वव्यापी घनघोर अंधेरे ने मानवजाति को घेर लिया है। समाजवाद ढह गया तो ऐसा ही होगा—यह आशंका रोमां रोलां ने एक दिन व्यक्त की थी। इस संकट का फायदा उठाकर साम्राज्यवाद- पूंजीवाद धार्मिक कट्टरता और आतंकवाद को उकसा रहा है ताकि देश-देश में जन आन्दोलन, क्रान्तिकारी आन्दोलन न उभर सकें। साम्राज्यवाद-पूंजीवाद जानता है कि संकटग्रस्त लोग बार-बार विक्षोभ से विस्फोट सा फूट पड़ेंगे, लेकिन क्रान्तिकारी विचारधारा, उन्नत नैतिकता और सही नेतृत्व न रहने से उनके अस्तित्व को कोई आंच नहीं आयेगी। विक्षोभ क्रान्ति में रूपान्तरित नहीं होगा। आज वही हो रहा है। विश्व समाजवादी व्यवस्था की गैरमौजूदगी का फायदा उठाकर ही उन्होंने इराक, अफगानिस्तान, लिबिया को तबाह कर दिया है, सीरिया में युद्ध की आग भड़का दी है, शिया-सून्नी का झगड़ा करवा दिया है। याद रखें, अलकायदा बनने से लेकर आईएसआईएस तक सभी अमेरिकी साम्राज्यवाद की पैदावार हैं, साम्राज्यवादी ही अपने शस्त्र उद्योग को चालू रखने के लिए उनको हथियार भी मुहैया करवा रहे हैं।

इसलिए ऐसी स्थिति में बेरोजगारी, छंटनी, महंगाई, भुखमरी और बेइलाज मृत्यु, इन्सानियत और नैतिकता का संकट, धार्मिक कट्टरता आदि के हाथों से मानव सभ्यता को बचाना है तो देश-देश में दोबारा चाहिए मार्क्सवाद को हथियार बनाकर साम्राज्यवाद-पूंजीवाद विरोधी समाजवादी क्रान्तिकारी आन्दोलन। अगले साल ऐतिहासिक नवम्बर क्रान्ति की 100वीं वर्षगांठ मनायी जा रही है। इस उपलक्ष्य में हमें देश-देश में समाजवादी क्रान्ति करने और विजयी करने का संकल्प दोहराना होगा।

समाजवादी क्रान्ति ही ला सकती है यथार्थ मुक्ति

दुनिया के करोड़ों करोड़ शोषित-पीड़ित लोग मुक्ति के लिए हाहाकार कर रहे हैं। समाजवादी क्रान्ति ही यथार्थ मुक्ति ला सकती है। इसके लिए चाहिए सही क्रान्तिकारी पार्टी, क्रान्तिकारी राजनीति, क्रान्तिकारी संस्कृति, क्रान्तिकारी चरित्र —कॉमरेड शिवदास घोष हमें यही सीख दे गये हैं। इसी उद्देश्य से उन्होंने सही क्रान्तिकारी पार्टी के रूप में एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) पार्टी की स्थापना इस देश में की थी। आज 5 अगस्त को इस पार्टी को और भी मजबूत करने की प्रतिज्ञा हमें करनी होगी। आज हमारे देश में चाहिए फिर भगत सिंह जैसा चरित्र। जिस भगत सिंह को फांसी से पहले उनके साथियों ने प्रस्ताव भेजा था कि तुम चाहो तो तुम्हे जेल से निकाल सकते हैं। भगत सिंह ने जवाब दिया था कि मैं आज क्रान्ति का प्रतीक बन चुका हूँ, मैं यदि भाग जाऊं तो क्रान्ति के इस प्रतीक पर कलंक लग जायेगा। मैं हँसते-हँसते फांसी के तख्ते पर जान न्योछावर कर दूंगा ताकि भारत की माताएं अपनी कोख से भगत सिंह पैदा होने की आरजू करें। इसके फलस्वरूप देश-देश में असंख्य क्रान्तिकारी योद्धा पैदा होंगे। नजरूल ने बंगाल की माताओं से आह्वान किया था कि खुदीराम की मां बनो। हम चाहते हैं इसी तरह के असंख्य क्रान्तिकारी, असंख्य खुदीराम, असंख्य भगत सिंह, असंख्य प्रीतिलता। जो मार्क्सवाद-लेनिनवाद-शिवदास घोष चिंतनधारा का परचम फहरायेंगे और पूंजीवाद- साम्राज्यवाद के खिलाफ लड़ेंगे।

अंत में आपसे अपील करता हूँ कि मोहल्ले-मौहल्ले, घर-घर में विद्यासागर से लेकर सभी महापुरुषों के जीवन-संघर्ष पर चर्चा करें। क्रान्तिकारी शहीदों के जीवन-संघर्ष पर चर्चा करें। अपने घरों के लड़के-लड़कियों को इस तरह तैयार करें। देखिये, मौहल्ले-मौहल्ले में बच्चे बिगड़ते जा रहे हैं, गंदे प्रवाह में बहते जा रहे हैं। हमारी पार्टी के कार्यकर्ताओं से भी कह रहा हूँ, लोगों से भी कह रहा हूँ कि हर सप्ताह एक दिन अपने मौहल्ले के बच्चों को बुलायें, उनको लेकर खेलकूद करें, साहित्य-संस्कृति की चर्चा करें और विद्यासागर-विवेकानंद से लेकर सुभाषचन्द्र बोस, रवीन्द्रनाथ, शरत्चन्द्र व क्रान्तिकारियों की जीवनियां सुनाकर उन्हें असली इन्सान की तरह तैयार करें। इन्सानियत पैदा करने का एक आन्दोलन शुरू करें। वरना आने वाले दिन और भी बुरे होंगे। अतः पूंजीवाद-विरोधी क्रान्तिकारी राजनीति और संस्कृति चाहिए, और उस राजनीति-संस्कृति की चर्चा कर रही है कॉमरेड शिवदास घोष की सीखों के आधार पर एकमात्र हमारी पार्टी एसयूसीआई(कम्युनिस्ट)। इस पार्टी को आप हर तरह की सहायता देकर मजबूत करें। सर्वहारा क्रान्तिकारी राजनीति और संस्कृति के बलबूते पर वर्ग संघर्ष और जन आन्दोलन गठित करें, जनकमेटियां और स्वयंसेवी दस्ते तैयार करें। यही बात कह कर मैं अपनी बात आज यहीं समाप्त करता हूँ। इन्कलाब जिन्दाबाद! एसयूसीआई(सी) जिन्दाबाद! सर्वहारा के महान नेता कॉमरेड शिवदास घोष लाल सलाम!

Printed and published by Com. Satyawan on behalf of the Central Committee of the Socialist Unity Centre of India (Communist) and printed at M/s Balaji Offset Printers, 315/21, Shahzada Bagh, Daya Basti, Delhi and published at 3A/38, WEA, Satnagar, Karol Bagh, New Delhi-110005. Editor: Com. Satyawan, Member, Central Committee, SUCI(C)."

Email: sarvaharadrishtikon@gmail.com , sarvaharadrishtikon@yahoo.com
फोन नं. : 011-25726631, 9868350503